विशिष्ठ शैली के अनूठे रचनाकार हैं मनोहर पुरी

नाम	:	**मनोहर पुरी**
पिता का नाम	:	स्वर्गीय श्री गोकल चन्द पुरी
पत्नी		डॉ.उषा पुरी
संतान	:	मानसी – सुपुत्री
घर का पता	:	82ए साक्षर अपार्टमेन्टस, ए–3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063 फोन :25284070 एंव 9810395223 ई–मेल : manohar _ @ yahoo .com
जन्म स्थान	:	लाहौर (अविभाजित भारत)
जन्म तिथि	:	2 अक्टूबर 1944
शिक्षा	:	एम.ए. राजनीति विज्ञान

पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए हिन्दी अकादमी,दिल्ली द्वारा साहित्यकार सम्मान से सम्मानित एवं रेल मंत्रालय ,भारत सरकार द्वारा मौलिक हिन्दी लेखन के लिए पुरस्कृत लेखक,कवि और पत्रकार मनोहर पुरी ने हिन्दी साहित्य को जितना योगदान दिया है उसका उतना मूल्यांकन संभवतः उनकी राष्ट्रीय विचारधारा के साथ प्रतिबद्धता के कारण नहीं हो पाया।

मनोहर पुरी का लेखन के प्रति रूझान बचपन से ही दिखाई देने लगा था। किशोरावस्था में ही उनकी रचनाए बाल पत्रिकाओं में स्थान पाने लगीं थीं। दसवीं की परीक्षा पास करते ही वह पूरी तरह से पत्रकारिता से जुड़ गए। पत्रकारिता करते हुए ही उन्होंने राजनीति विज्ञान में आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। गत चालीस वर्षों से आकाशवाणी सहित अनेक प्रतिष्ठित भारतीय एवं विदेशी संचार माध्यमों एवं पत्रों के लिए लेख, कविताएं, कहानियां, निबंध, व्यंग्य एवं संसद समीक्षाएं लिख रहे हैं।

मनोहर पुरी ने सजृनात्मक साहित्य की रचना करके भी हिन्दी साहित्य में अपना स्थान बनाया है। अब तक उनके दो

उपन्यास,दो कविता संग्रह,दो कहानी संग्रह और पांच व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। व्यंग्य के क्षेत्र में उन्होंने एक विशेष शैली का विकास करके अपनी अलग से पहचान बनाई है।

मनोहर पुरी ने पर्वतारोहण के विभिन्न पक्षों पर पुस्तकों की रचना करके हिन्दी को समृद्ध कियष है। इस विषय पर बहुत कम भारतीय लेखकों ने लेखनी चलाई है। मनोहर पुरी का विशेष योगदान बाल साहित्य के क्षेत्र में भी । उन्होंने साठ से अधिक सुरुचिपूर्ण एवं शिक्षाप्रद पुस्तकों की रचना की है।

व्यवसाय : पत्रकारिता एवं लेखन

भाषाओं की जानकारी : हिन्दी, अंग्रेजी एंव पंजाबी

पत्रकारिता अनुभव : **चालीस वर्ष**

सम्पादक : दैनिक नव प्रभात, आगरा।
डेली न्यूज डे
के.पी.आई.फीचर्स
हौज़री सन्देश पाक्षिक
एक नजर साप्ताहिक
शताब्दि मेल साप्ताहिक
मीत साप्ताहिक
सम्पादक – विश्व संवाद केन्द्र समाचार
सम्पादक ,युगवार्ता समाचार एंव प्रसंग लेख सेवा

सह सम्पादक : द सेंचुरी
नई कहानियां
मदर इंडिया चिल्ड्रन एब्रोड वार्षिकी

विशेष संवाददाता
दैनिक विश्वमित्र
इन्फोसूद , स्विटजरलैंड की फीचर सेवा
दैनिक भास्कर, ग्वालियर

दैनिक स्वतंत्र भारत, लखनऊ
दैनिक अभीत (पंजाबी), दिल्ली
दैनिक अमृत पत्रिका (पंजाबी), दिल्ली
साप्ताहिक पांचज□य, नई दिल्ली

सम्पादन

मदर इंडिया चिल्ड्रन एब्राड
इंडो–म्यांमार रिलेशन्स पास्ट, प्रेसंट एण्ड फ्यूचर
क्वैस्ट फॉर पीस इन श्री लंका
कन्स्टीटूशनल मोनॉरकी एण्ड़ डेमोक्रेसी ईन नेपाल
फोकॅस ऑन मलेशिया
पी ई ओ नाउ एण्ड दैन
गोपियो स्मारिका

अध्यापन : दिल्ली विश्वविद्यालय के अदिति महाविद्यालय में पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातक (विशेष) पाठ्यक्रम विषय का अध्यापन।

एमेटी स्कूल ऑफ जर्नलिजम,नोएडा में समय समय पर व्याख्यान।

एमेटी एजूकेशन इंस्टीटूयट,नई दिल्ली में पत्रकारिता से जुड़े विषयों पर व्याख्यान।

भारतीय अनुवाद परिषद,नई दिल्ली एवं अन्य अनेक संस्थानों में पत्रकारिता से सम्बन्धित विषयों पर व्याख्यान।

प्रकाशन : ***समालोचनात्मक***

प्लेटो और अरस्तू के दार्शनिक सिद्धांत
दो साम्यवादी व्यवस्थाएं : सोवियत संघ एवं चीन के संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन
प्राचीन यूनानी विचारक
समकालीन भारत
पुरीज इन्टरनेशनल लॉ
क्या है हमारा संविधान
कैसे बनते हैं राष्ट्रपति
कैसे बनती है लोकसभा
क्या होती है राज्यसभा
कैसे चुने जाते हैं लोकसभा के सदस्य
पंचायत का गठन

सृजनात्मक

अतीत की परछाइयां (लघु काव्य)
मेरा भारत महान (व्यंग्य–संग्रह)
चंद बीवियों की तलाश (व्यंग्य–संग्रह)
रौंद कर दौड़िए (व्यंग्य–संग्रह)
जूठन (व्यंग्य – संग्रह)
उन्नीस महीने (उपन्यास)
तूलिका (कहानी–संग्रह)
यूं ही कह दिया होगा ि(कहानी संग्रह)
सीप में समुद्र (कविता–संग्रह)

विवरणात्मक

एक्सपलोर हिमाचल
ट्रैकिंग इन इंडिया
मॉउटेन वाकिंग(तकनीकी)
रॉक क्लाइमिंग (तकनीकी)
मॉउटेन क्लाइमिंग (तकनीकी)
ट्रकवाहिनी रेल व्यवस्था (तकनीकी) (रेल मंत्रालय द्वारा पुरुस्कृत)
पर्वत भ्रमण (तकनीकी)
ट्रैकिंग – हिन्दी,गुजराती,पंजाबी एवं अंग्रेजी में एन.बी.टी.द्वारा प्रकाशित (अनेक अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशनाधीन)
शिलारोहण – हिन्दी एवं अंग्रेजी में एन.बी.टी. द्वारा प्रकाशित (अनेक भारतीय भाषाओं में में प्रकाशनाधीन)

पत्रकारिता(अंग्रेजी में)
आर्ट ऑफ जर्नलिस्म
आउट लांइस ऑफ मॉस कम्यूनिकेशन
कैरियर इन मॉस कम्यूनिकेशन
आर्ट ऑफ एडिटिंग
आर्ट ऑफ रिर्पोटिंग
पर्यटन प्रबंधन (अंग्रेजी में)
टूरिज्म एण्ड होटल इन्डस्ट्री
टूरिज्म मैनेजमैंट
ट्रैवल एण्ड टूरिज्म
ट्रैवल एजेन्सी एण्ड टूरिज्म
नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित
बाल साहित्य
आओ गले मिलें
शंख परी
अन्य प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य
खंड़हर का खजाना
पानी तेरे रूप अनेक
औषधियां भी हैं महकते फूल
कसूर किस का
ईमानदारी का ईनाम
जादूगर का बोरा
होनहार श्रवण कुमार
दोस्ती
असली तस्वीर
लालच
घमंडी शेर
जादूई थैली
जैसे को तैसा
आंखों वाले अंधे

तेनाली राम का जवाब नहीं
बादल और गौरैया
मूर्ख चिड़िया
सारस की एक टांग
मटके में सीताफल
आलसी गिरगिट
गूंजता संगीत
अपने अपने रंग
प्रधान मंत्री का चुनाव
बाज की उड़ान
वचन का पक्का हिप्पो
दोस्ती की धारियां
खरगोश की दुम
विष्णु वाहन गरुड़
रेल का पास
गिद्धों का अनुशासन
खरगोश के कानसात
बाल कहानियां

प्रकाशनाधीन

तेरे मेरे गीत (कविता संग्रह)
बाल गीत(अ से त्र तक)

अनुभव एंव पदस्थापनाएं :

चालीस वर्ष । अकाशवाणी से लगभग दो सौ से अधिक वार्ताओं, संसद समीक्षाओं और समसामयिक टिप्पणियों का प्रसारण।
पांच सौ से अधिक कहानियां, कविताएं, व्यंग्य एंव समसामयिक लेख देश विदेश की ख्याति लब्ध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित।
विभिन्न विद्वानों द्वारा पत्रकारिता के विषय में संपादित पुस्तकों में लम्बे लेखों का प्रकाशन।

सेमीनार,कार्यशालाओं में भागीदारी :

गोपियो (ग्लोबल आरगेनाइजेशन ऑफ पीपुल्स ऑफ इंड़ियन ओरिजन) के तत्वाधान में फरवरी 2000 में आयोजित अप्रवासी भारतीयों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में, सक्रिय भागीदारी। इससे पूर्व नवम्बर, 1998 में भारतीय मूल के सांसदों के सम्मेलन में भी समन्वयक की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह।
अप्रवासी भारतीय दिवस 9 जनवरी 2003 के अवसर पर पुनः भारतीय मूल के सांसदों के दूसरे सम्मेलन का संस्था के संयुक्त सचिव के रूप में संयोजन।

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पाठक मंच अभिमुखीकरण कार्यक्रम में राजस्थान,छत्तीस गढ़ तथा दिल्ली में स्त्रोत व्यक्ति के रूप में भागीदारी।

विश्व मैत्री सम्मेलन, डेनमार्क ;1984द्ध में आमंत्रित

1991 में अमरीका में आयोजित वर्ल्ड विजन 2000में एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व एंव प्रेस कवरेज का दायित्व ।

1984 में मारीशस में भारतीयों के आगमन के सन्दर्भ में आयोजित 150वीं वर्षगांठ के समारोहों में भारत के 144 सदस्यीय प्रतिनिधि मंड़ल का समन्वयक। प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री राम दुलारी सिन्हा ने किया। तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह मुख्य अतिथि थे।

चीन सरकार के आमंत्रण पर 1991 में भारत के दो सदस्यीय पत्रकारों के दल का सदस्य।

दो बार भूटान नरेश के आमंत्रण पर भारतीय प्रतिनिधि मंडल का सदस्य।

फ्रैंकफुर्त , जर्मनी में आयोजित पुस्तक मेले में भागीदारी ।

वर्ल्ड ट्रेवल सेमीनार, लन्दन, में लेखक के रूप में भागीदारी

इन्डोनेशिया और मलेशिया में भारतीय संस्कृति के अध्ययन के लिए गए दल में सदस्य के रूप में सम्मिलित।

'ला मारीशस' समाचार पत्र को प्रारम्भ करने के लिए परामर्शदाता के रूप में आमंत्रित ।

जर्मनी से प्रकाशित ' द कंटेक्ट' का मुख्य सलाहकार।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार की केन्द्रीय प्रेस प्रत्यानन समिति का सदस्य।

मानव संसाधन मंत्रालय,भारत सरकार की वर्तमान लिटरेसी मैटिरियल प्रमोशन कमेटी का सदस्य।

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित लेखकों की अनेक वर्कशॉप में भागीदारी।

जामिया मिलिया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भागीदारी।

भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में लन्दन में आयोजित छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन(सितम्बर 1999) में ***प्रेस के सम्मुख चुनौतियां*** विषय पर आलेख।

सूरीनाम में आयोजित सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन(जून 2003) में भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भागीदारी। हिन्दी पत्रकारिताः नयी शताब्दी की चुनौतियां के सत्र में हस्तक्षेप एंव ''इन्टरनेट और पत्रकारिता'' आलेख की प्रस्तुति।

इम्फाल,मणीपुर में आदिवासियों की बोलियों पर पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित लेखकों की पांच दिवसीय वर्कशाप में रिसोर्स पर्सन के रूप में भागीदारी।

सम्मान : वर्ष 1996 के लिए हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा ***पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए साहित्यकार सम्मान से सम्मानित।***

रेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा तकनीकी–मौलिक लेखन पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 1996 में ***तकनीकी रेल विषयों*** पर हिंदी में मौलिक लेखन के लिए 'ट्रकवाहिनी रेल व्यवस्था' पुस्तक पुरुस्कृत ।

खानकाह सूफी दीदारशाह चिश्ती द्वारा संचालित सम्मानोपाधि चयन प्रतियोगिता में **''भारतीय साहित्य रत्न सम्मान''** से सम्मानित और उत्कृष्ट चिन्तन सजृन के लिए **''बहुमुखी प्रतिभा रत्न''** की उपाधि से विभूषित।

त्रिनिडाड और टुबैगो की भारतीय विद्या संस्थान द्वारा **''पत्रकार रत्न सम्मान''** से सम्माति।

भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा ***हिन्दी पत्रकार कोश*** निर्माण हेतु वरिष्ठ फैलोशिप। यह पत्राकार कोश हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में किया जाने वाला एक बेजोड़ प्रयास है।

सम्प्रति : संपादक,क.प.ई.फीचर्स(लेख एवं समाचार सेवा)

स्वतंत्र पत्रकार के रूप में भारत सरकार सूचना विभाग द्वारा प्रत्यातित।

भारतीय संसद के सेन्ट्रल हॉल में जाने की सुविधा सहित राज्य सभा एवं लोक सभा की प्रेस गैलरी के लिए प्रत्यातित।

न्यासी : विश्व संवाद केन्द्र न्यास, नई दिल्ली।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग न्यास,नई दिल्ली।

यात्राएं : अनेक बार भारत के अधिकांश दर्शनीय स्थलों की यात्रा, विशेष रूप से पर्वतीय एंव समुद्र तटीय प्रदेशों का भ्रमण और ऐसे स्थलों से सम्बन्धित लेखन। आस्ट्रेलिया के अतिरिक्त विश्व के समस्त महाद्वीपों की यात्रा। यूरोप और अफ्रीका के अधिकांश देशों के भीतरी भागों की अनेक बार यात्राएं और वहां के जन जीवन का गहन अध्ययन। अमेरिका, कनाडा और कैरेबियन के क्षेत्रों का भ्रमण। चीन, मलेशिया और इन्डोनेशिया सहित कई दक्षिण पूर्वी देशों की सभ्यता और संस्कृति का निकट से अवलोकन।

सदस्य : संयुक्त सचिव अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद्, नई दिल्ली

ग्लोबल आरगेनाईजेशन ऑफ पीपुल्स ऑफ इंड़ियन ओरिजन

कार्यकारिणी सदस्य, उद्योग भारती, नई दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय यूथ हॉस्टल, नई दिल्ली

इन्टरनेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्टस, लन्दन

नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्टस (इण्डिया) नई दिल्ली

प्रेस एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

फ्रैंकफुर्त्त प्रेस क्लब का सदस्य

सचिव पर्यावरण एवं समाज सेवा संघ,मनाली

उपाध्यक्ष — जीवन संध्या आश्रम , हमीर पुर (हि.प्र.)
परामर्शदाता — मासिक अट्टहास,लखनऊ
त्रैमासिक सद्भावना दर्पण, रायपुर

मनोहर पुरी की मनोहर कहानियां

डॉ० वासुदेव

मनोहरपुरी कथाकार होने के साथ एक व्यंग्यकार, कवि और पत्रकार भी हैं और उनकी इस बहुमुखी प्रतिभा का प्रभाव उनके कहानी संकलन 'तूलिका' की कहानियों पर भी स्पष्ट रूप से पड़ा है। यही कारण है कि तूलिका की कहानियों में कहीं व्यंग्य की बानगी देखने को मिलती है तो कहीं काव्य का आस्वाद भी होता है और पत्रकारिता की गंध भी मिलती है।

'तूलिका' मनोहर पुरी का प्रथम कहानी संकलन है जिसमें युवाकाल से लेकर आजतक की उनकी कुल जमा ग्यारह कहानियां संकलित हैं। किन्तु ये कहानियां विभिन्न स्वादों वाली हैं और यही कारण है कि पाठकीय रोचकता शुरू से लेकर अंत तक की कहानियों में बनी रहती है। यदि यह बात मान ली जाए कि कहानी का एक सतही उद्देश्य मनोरंजन करना-भर है, तो उस दष्टि से इन कहानियों का पाठकीय महत्व और बढ़ जाता है। इस दष्टि से इस 'तूलिका', 'पहल', 'महुआ', 'रात की शहजादी', 'दूसरी निम्मो' आदि कहानियां पाठनीय है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि संकलन की कहानियां केवल रोचकता की दष्टि से ही महत्पवूर्ण हैं और उनका सामाजिक महत्व गौण है। सच तो यह है कि कहानीकार ने हर कहानी के पीछे अपना एक विशेष उद्देश्य रखा है और वे उद्देश्य प्रायः सामाजिक महत्व के ही हैं। यदि इस कथन को और स्पष्ट किया जाए तो इस संकलन की पहली कहानी 'एक बार फिर', 'मानवता जाग उठी', 'अम्मा', 'खून का रिश्ता' आदि कहानियों द्रष्टव्य हैं। 'एक बार फिर' ऐसे परिवार की कहानी है, जिस परिवार में एक सुन्दर युवक है कोमल जिसकी शादी उसकी मां एक धनाढ्य की कन्या मीता से कराती है। शादी के बाद वह बहू को तलाक दे देने, जला कर मार देने आदि की धमकी दे देकर उसके मां-बाप से पैसे ऐंठता रहता है तथा पूरा परिवार ऐश-मौज करता रहता है। पर मां बेटे से हमेशा कहती रहती है कि उस लड़की को मां बनने मत देना, किन्तु मीता के बाप सी०बी०आई० द्वारा पकड़ा जाने के कारण जब दिवालिया हो जाते हैं, तब वहीं मां मीता को मिट्टी तेल छिड़क कर जला देती है तथा बेटे की कल्पना नामक दूसरी धनाढ्य लड़की से शादी की बात करती है। किन्तु इस बार भी यही हिदायत देती है 'देख बेटा, कल्पना को मां बनने का मौका मत देना नहीं तो....।' कहानीकार स्वयं अंत में लिखता है, 'इतिहास अपने आपको फिर दोहराने लगा-न जाने कब तक दोहराता ही रहेगा कोई नहीं जानता।'

यह हमारे आज के समाज की एक तल्ख हकीकत है, जो भोगवादी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर सड़कर बजबजा रहा है। पाश्चात्य अभिजात्यवर्ग की जो गंदी संस्कृति भारतीय समाज में प्रवेश कर गयी है, लेखक इस कहानी के द्वारा उसे उजागर करने में बहुत हद तक सफल हुआ है।

इसी तरह की यथार्थवादी कहानी है 'पहल' जिसमें गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे एक ऐसे परिवार की कहानी है जिस समाज की लड़कियां जवान होने पर स्वेच्छा से धन्धे पर बैठ जाती हैं और उनके मां-बाप तथा भाई भी उस काम में उनकी मदद करते हैं। छन्नो नाम की लड़की जब देखती है कि उसकी उम्र से छोटी-छोटी लड़कियां धन्धे पर बैठकर अपनी कमाई से घर चला रही हैं और एक वह है कि अब तक बाप-भाई की कमाई की रोटी तोड़ रही है। कहानीकार के ही शब्दों में, 'आज स्वयं छन्नो ने बात चलाई थी और कहा था, 'बापू, अब मुझे भी कमाई पर लगना चाहिए। आखिर मैं कब तक मर्दों की तरह से बेकार बैठी तुम्हें सब सहते देखती रहूं। मां के न रहने से तुमको जो मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है, वह क्या मुझसे छिपा है। बस्ती में आनेवाले दो चार लोगों ने मेरे बारे में इधर-उधर पूछना भी शुरू कर दिया है, परन्तु मेरी ओर से कोई बात करने वाला नहीं है और तुम हो कि कोई ध्यान ही नहीं है कि मैं कितनी जवान हो गयी हूं। (प० ३५)

लेखक की इस यथार्थवादी दष्टि को देख कर सुखद आश्चर्य होता है। सच तो यह है कि आठवें दशक से हिन्दी में अधिकांशतः कहानियां यथार्थवादी ही लिखी जाती रही हैं किन्तु नवें दशक के प्रारम्भ में कहानी-कला में एक अदभुत बदलाव आया और हिन्दी कहानी आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद की ओर उन्मुख होती गयी और यह परम्परा आज भी हिन्दी कहानी में जीवित है। कहना अनावश्यक नहीं होगा कि मनोहरपुरी ने अपनी 'पहल' शीर्षक कहानी में उसी परम्परा का निर्वाह किया है। छन्नो भले ही देह-व्यापार के लिए बेताब है लेकिन उसका बूढ़ा बाप ऐसा नहीं करना चाहता। लेखक के ही शब्दों में ''उसे यही चिंता दिन-रात खाए जा रही थी कि वह किसी भी प्रकार से छन्नो को यहां से निकालकर ले जाना चाहता था...।'' (प० ३६) और सचमुच वह एक सुबह छन्नो को इस नरक से निकाल ले जाता है।

यही कहानीकार का आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दष्टिकोण है जो परम्परा प्रेमचंद से विरासत में हिन्दी कहानी को मिली है। इस तरह की एक दूसरी घोर आदर्शवादी कहानी है 'मानवता जाग उठी' जो ग्राम मुवासा के दो परिवार की कहानी है जो ऐतिहासिक जमीन से जुड़ी है। चीनी आक्रमण के समय राष्ट्रीय सुरक्षा कोश में एक चौधरी सेठ द्वारा अत्यधिक दान देने पर उस इलाके के ठाकुर की छाती पर सांप रेंगने लगता है। वह प्रतिशोध की आग में जलने लगता है तथा नीचा दिखाने के कारण चौधरी सेठ से बदला लेने की बात सोचने लगता है। किन्तु अचानक उसके अंदर भी राष्ट्रीयता की भावना जाग उठती है और वह भी अपना सर्वस्व राष्ट्रीय सुरक्षा निधि में दान कर देता है। इस कहानी में कथाकार की राष्ट्रीय भावना द्रष्टव्य है। यह राष्ट्रीय परिवेश की एक अच्छी कहानी है।

कहानीकार की सफलता बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि उसके कथ्य में कितनी विधिवता और प्रासंगिकता है इस दष्टिकोण से भी मनोहरपुरी एक सफल कथाकार के रूप में अपने प्रथम कथा संकलन 'तूलिका' के माध्यम से हमारे समक्ष आते हैं। अवश्य ही 'तूलिका' की ग्यारह कहानियों में कथ्य की विविधताएं हैं। 'अम्मा' कहानी में जहां स्वर्गीय इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रीत्व काल के राजनैतिक भ्रष्टाचार को बेनकाब किया गया है, वहीं 'के०सी०लाल' में एक ऐसे मंत्री का चरित्र सामने रखा गया है जो पहले तो नामी गरामी गुण्डा था और अपनी उसी गुण्डागर्दी के बलपर एक मंत्री भी बन जाता है। हमारे आज के समाज का राजनैतिक परिवेश कुछ इस तरह का हो गया है यानि आज राजनीति का गुफा या अपराधीकरण हो गया है। कहानीकार बड़ी साफगोई के साथ उस कडवे यथार्थ को अपने पाठकों के समक्ष

प्रस्तुत कर देता है जिसे पढ़कर पाठक हतप्रभ रह जाता है। कहानीकार न तो लाठी-बन्दूक उठा सकता है और न ही मौन रह कर हर बात को चुपचाप देख सकता है। समाज की कडवी सच्चाई को संयमित तरीके से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देना और उसकी ओर पाठकों का ध्यान आकर्ित कर देना ही उसका काम है। लगता है इस कार्य में कथाकार को अवश्य ही महारत हासिल है। तभी तो उनकी इस कृति से पाठक भी उद्वेलित हुए बिना नहीं रहता।

कहानीकार की लेखकीय क्षमता की विविधता का परिचय 'संगम' और 'तूलिका' कहानी में भी मिलता है। 'संगम' दो युवा भिखारियों की प्रेम-कथा है, जो इस जन्म में तो नहीं मिल पाते और अगले जन्म में मिलने की तमन्ना लिए अवश्य यह लोक छोड़ देते हैं। भिखारी भी साधारण इन्सानों की तरह हा प्रकारकी भावनाओं और संवेदनाओं के प्रभावित होते हैं। उन्हें भी समाज में व्याप्त संकीर्णताओं का श्किार होना पड़ता है इस तथ्य को बहुत गंभरतापूर्वक उकेरा गया है। वहीं 'तूलिका' जो एक संस्मरणात्मक शैली में लिखी गयी कहानी है। यह कहानी पेरिस की जमीन-खासकर सैन्टपाल चर्च के पास के चित्रकारों के जीवन पर केन्द्रित है। कहानी में एक महिला चित्रकार अलफान्से है जो पूरी तरह से अपने प्रेमी अलान्द्रे के प्रति तन,मन और धन से समर्पित है। जिसके चित्र कभी उसके अपूर्व सौन्दर्य की भान्ति ही लोगों के आकर्षण के केन्द्र हुआ करते थे, अपने प्रेमी की उपेक्षा और स्वार्थपरता की शिकार होती है। अलान्द्रे अपनी प्रेमिका का उपयोग एक सीढ़ी की भान्ति करता है और जब उसकी अपनी कला को मान्यता मिल जाती है तो वह अलफान्से से किनारा करके उसे मझधार में ही छोड़ कर चल देता है। फलस्वरूप वह अपनी कला से विमुख पागल बनी भीख मांग कर अपना जीवन निर्वाह करती है। इस तरह हम देखते हैं कि लेखक की 'संगम' भी एक प्रेम-प्रधान कहानी है और 'तूलिका' भी। किन्तु दोनों की जमीन में आकाश-पाताल का अंतर है और मजे की बात यह है कि दोनों की कहानियां में लेखक की सजनात्मक क्षमता का आभास सहज ही हो जाता है।

हिन्दी कहानी में लोककथा की एक सुदीर्घ किन्तु सशक्त परम्परा रही है। कहानी सम्राट प्रेमचंद तक ने लोककथा को आधार बनाकर कहानियां लिखी हैं। राजस्थान के चर्चित कथाकार विजयदानदेथा की पहचान ही इसी रूप में बनी है। किन्तु अभिजात्य समाज में रहने-पलने वाले कहानीकार मनोहर पुरी की सजनात्मक प्रतिभा लोककथा से वंचिता नहीं है। 'संग्रह की सबसे खुशबूदार जायकेदार कहानी 'महुआ' लोक कथा पर ही आधारित है जिसमें महुआ नामक एक गरीब ग्रामीण बाला तथा जमीन्दार-पुत्र के प्रेम-प्रसंग का चित्रण बहुत ही अनूठे अंदाज में किया गया है। दो सच्चे-प्रेमियों - महुआ और राजकुमार का मिलन तो इस जन्म में नहीं हो पाता, किन्तु गरीब ग्रामवासियों के खेतों की सिंचाई के लिए नहर की धारा उनकी ओर जरूर मुड़वा दी जाती है। इस कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह कहानी पूर्णतः लोकोन्मुखी है। यही कहानीकार को वसुधैव बना कुटुम्बकम् वाला दष्टिकोण देता है और यही कहानी का विश्व-जीवन तत्व है।

किसी रचना का मूल्यांकन दो दष्टिकोण से किया जाता है-भाव पक्ष और कलापक्ष। 'तूलिका' की कहानियों के बीच से गुजरते हुए ऐसा स्पष्ट होता है कि कहानियों का भावपक्ष जितना सशक्त है कलापक्ष उतना सशक्त नहीं है । इसके संभवतः दो कारण हैं-(क) कहानी कला को शायद उतनी गम्भीरता से नहीं लिया गया (ख) कहानी को शास्त्रीय कहानी के रूप में लिया ही नहीं गया यानी कहानी लेखन के लिए जितने श्रम की आवश्यकता होती है, उतना श्रम नहीं किया गया। यही कारण है कि संकलन की अधिकतर कहानियों में शिल्पगत बिखराव नजर

आता है। सच तो यह है कि हर कहानी का अपना एक कथ्य व परिवेश होता है और उसी कथ्य और परिवेश के आधार पर पात्र तथा भाषा-शैली गढ़े जाते हैं। भाषा-शैली की ओर तो कथाकार ने कभी भी ध्यान देना उचित नहीं समझा 'संगम' की जो भाषा है वहीं 'तूलिका' की और वही 'महूआ' की। जबकि तीनों कहानियों की जमीन में बहुत अन्तर है। काश लेखक ऐसा कर पाता तो कहानी की प्रभाविकता बढ़ जाती।

लेखक ने भाषा, शब्द और व्याकरण की भूलें भी कम नहीं की हैं। दूसरी निम्मों कहानी को ही देखा जाए। ''उसने हड़बड़ा कर आंखें खोलीं तो पाया वह जर्मन युवती उसकी बाहों में सिमटी, उसके वक्षपर सिर टिकाए गहरी निन्द्रा में सोई हुई थी'' (प० ८१) उसी कहानी में अगले अनुच्छेद का वाक्य है, ''जब रात्रि में वह इस डिब्बे में सवार हुआ तो...'' (प० ८३) इसके बाद लेखक फ्लैश बैंक में चला जाता है-२० वर्ष पूर्व। एक वाक्य देखिए, ''थोड़ी देर में रात घिरने लगी। चारों ओर रात की चादर हर चमकीली वस्तु को अपने में लपेटने लगी।'' (प० ८७) यानी कहानी कहने में लेखक इस तरह मशगूल हो जाता है कि उसे समय और काल का अंदाज ही नहीं रहता। इस कहानी का एक दोष यह भी है कि जहां कथा को विराम देकर लेखक फ्लैश बैक में जाता है, कहानी वहीं खत्म हो जाती है।

आज की कहानी की यह अनिवार्य शर्त है कि कहानी में पात्रोचित भाषा का प्रयोग किया जाए। जगदम्बा प्रसाद दीक्षित, मनोहर श्याम जोशी आदि इस तरह के प्रयोग के कारण भी इतने चर्चित हुए हैं। किन्तु पूरे संकलन की कहानियों में लेखक ने कहीं भी इस पर ध्यान नहीं दिया है। 'अम्मा' की नायिका जो एक नौकरानी है कहती है, ''भाड़ में जाए ऐसी जमीन- नहीं चाहिए मुझे, मैं क्या मांगने गयी थी या अब बच्चे जनने बैठी थी। विधवा हुए चालीस बरस हो गए बेटी। मजाल है जो सुमेरी के बाप के मरने के बाद किसी मरद की तरफ आंख उठाकर भी देखा हो।'' (प० ४२) 'रात की शहजादी' की नायिका ताई जो एक नेपाली महिला है, उसकी भाषा देखिए, ''सोचा तुमने ठीक ही है। वास्तव में ये लोग रात को होटलों में अपना माल लेकर पहुंचते हैं, दिन-भर ग्राहकों की तलाश में रहते हैं इनके लोग और रात में सामान का सौदा होता है।'' (प० ६३) वहीं विदेशी जमीन की कहानी 'तूलिका' की नायिका अलफान्से की भाषा है- ''पैसे लेने आये हो.... नहीं है मेरे पास अभी... लो इसे ले जाओ हिसाब बराबर।'' (प० २६)

भाषा एवं व्याकरण के प्रति इस उदासीनता का शायद मुख्य कारण यही है कि मनोहर पुरी कहानीकार के साथ कवि, व्यंग्यकार और पत्रकार हैं और सबसे बड़ी बात कि वह जन्मजात घुमन्तू हैं। वैसे लेखक के पास जबर्दस्त कथ्य है, अभिव्यक्ति क्षमता है, कहानी कहने की कला भी है और इन गुणों के कारण यह विश्वास पनपता है कि आने वाले समय में एक से बढ़कर एक मनोहर कहानियां पढ़ने को मिलेंगी। वैसे भी यदि इन कहानियों का 'पाकेट' संस्करण भी निकलता है तो अवश्य ही कहानियों की लोकप्रियता में वद्धि होगी क्योंकि पाठकीय मनोरंजन के सारे गुण इन कहानियों में हैं।

धर्मशीला कुटीर,
अड़सण्डे, बोड़या,
रांची .८३४२४०

तमस-उजास का आचरण शिल्प

शापग्रस्त राजनीति को जीते हुए आज हम स्वाधीनता का रजत जयन्ती वर्ष बुझे मन से उल्लासपूर्वक मना रहे हैं। कछुआपीठी नेताओं ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को कलंकित कर दिया है, जनपथ की यही स्वर्णवर्षी नियति है। सांस-सांस भ्रष्टाचारी आचरण से ऐसी बिंधी है कि अन्दर का पर्यावरण प्रदूषित हो चुका है, काला धुआं रेंग रहा है ब्रह्मकमल पर। संक्रमण के इस स्वर्णवर्षी काल में साम्प्रदायिकता, कठमुल्लापन, धर्मविरुद्ध आचरण, जातिवाद, अर्थशापित विखंडीकरण, संदेह, शंकाबोध के प्लेग ने प्रत्येक मानस को आक्रामक, विवश, गरीब की जोरु बना दिया है, रीढ़ झुकी है, मन का फासफोरस चुक रहा है, बुद्धि तर्कधर्मी अनुशासन के नाम पर भावना की कोख को बलात् कलंकित कर रही है और आगे आ रही है कुबड़ी अनाथ पीढ़ी जिसका पीत दर्शन डायलिसिस के काल कवच में घुट-घुट कर सांस ले रहा है।

कागजों की छाती को रौंदती-चीरती ढोल पीटती आजादी की अर्द्धसदी के मोहकदंशों ने आज मनुष्य को बौना, छोटा अपने आप से कटा मनबहलाऊ जोकर बना दिया है। जीवन के सर्कस में खुद से खुद की शिनाख्त करने की दारुण यातना में दशानन मुखौटों को धारण कर कांग्रेसी अट्टहास ने अन्धविरासत ढोते वर्तमान जीवन को भीड़ का एक नारेजनित हिस्सा बना दिया है जिस पर राजपथ के खम्भे बड़ी मजबूती से गड़े हैं और उन पर लटकी है रोमेश भंडारी मार्का लालुयी तानाशाही, मुलायमी-माया के काशीतीर्थ में श्मशानी चिरायंध के आपात् सत्तामंत्र जिनकी संस्कार संस्कृति में अर्द्धसदी का स्वर्णमगी इतिहास जनसीता को सम्मोहित कर आज तक रामराज्य को छलता रहा है।

श्री मनोहर पुरी ने इस मानसिकता को बहुत करीब से जिया है। पत्रकार होने के नाते वे राजनेताओं और राजनीति से प्रत्यक्ष जुड़े हैं और उनकी प्याजधर्मी मानसिकता को उधेड़ते रहे हैं। अपने चुटीले, सुई नुकीले व्यंग्यों से वे राजनीति में रचनात्मक हस्तक्षेप करते रहे हैं। उनके साहित्यिक पत्रकारीय व्यक्तित्त्व में चौकन्नी तंदूर लपट अग्नि है। समकालीन स्थितियों को ये अपने व्यंग्य-अलाव में पूरी तरह पकाते हैं, उनकी सामाजिक मानवीय चर्तुभुजी दष्टि में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चिन्तन कोण व्यंग्य की सख्त परतों को छील कर भाषिक स्तर पर ताल करते हैं जिससे व्यंग्य का भांगरसी धर्म धीरे-धीरे अपना काम करता है, साइनाइड-आणविक आक्रमण नहीं करता। इनकी साहित्यिकता व्यक्ति को संभलने का मौका देने की पक्षधर है, जीवन के मूर्च्छित क्षणों में मंथन-संदेश देने वाली सकारात्मक दष्टि, तमस से उजास का आचरण शिल्प। इनकी बौद्धिकता में क्रन्दन नहीं है अपितु वर्तमान से परंपरा का संस्कृति संवाद है। इसीलिए उनके व्यक्तित्व में साहित्यिकता का मूल अर्क कमल की तरह पंखुरियां खोलता है, कीचड़ से ऊपर उठकर राजनीति के हरम षड्यंत्रों को आर-पार कर मानव संस्कृति की बात करता है, उसे जगाता है।

पत्रकारों, मीडियाकारों की खिसियाती ठिलठिलाती भीड़ के बीच समकालीन गलत आकांक्षाओं के स्याह अन्तर्विरोधों की गांठों को खोलने वाले इस रचनाकार व्यक्तित्व के व्यंग्यमर्म के एक-एक शब्द-मात्रा में विद्युत तनतनाहट का अहत करने वाला करंट दौड़ता है, वह चाहे उनके लोकतंत्र के काले अध्याय आपात्काल पर लिखे 'उन्नीस महीने' का औपन्यासिक फलक हो अथवा मन की संपूर्ण तरलता और जीवन के विद्रूप सत्यों को एक बुनकर की तरह बुनने की महीन कला में माहिर गीतमन से निकला जीवन का आसव 'सीप में समुद्र' हो अथवा अन्य साहित्यिक विधाओं का निर्मित पथ हो-सभी मोड़ों पर उनका सजग पत्रकारीय साहित्यिक व्यक्तित्त्व मील के पत्थर की तरह मार्गदर्शक बना है।

'मेरा भारत महान', 'रौंद कर दौड़िए', के बाद 'चंद बीवियों की तलाश' उनका तीसरा व्यंग्य नेत्र है। इस तीसरे नेत्र की मुंदी पलकों में समकालीन स्थितियों की हाहाकारी जीवन्त कालव्यथाएं हैं जो व्यंग्य की कठोर धरती पर मनुष्य के पूरे वजूद को चुनौती ही नहीं देती उसे पथ देकर उसकी अस्मिता से परिचित करवाती हैं। व्यंग्य के उन कैक्टसमुखी कालविष को पीने के लिए आप शंकर चाहे न बनें अपने मन-व्यक्तित्व को वासुकी मंत्र तो बनाना ही होगा। वह चाहे 'चंद बीवियों की तलाश' हो या 'बन्दर लोकतंत्र के अन्दर' हो अथवा 'एक अदद सीट का सवाल' हो या 'रूठ के मेरी सरकार जा रही है' हो- सभी व्यंग्यों में काल के नुकीले दंश हैं जो बेचैन करते हैं, मंथन का संदेश देते हैं।

आज की राजनीति कुरूप, भदेस और पलक झपकते जगह बदलने वाले रेत के ढूहों की तरह सपाट और इकरंगी है। आज के अधिकांश राजनीतिज्ञ बगैर रूह के इंसानी जिस्म मात्र हैं, व्यक्ति से ज्यादा वह प्रेत हैं, एक साया। विचार की अतियां अनाचार और अत्याचार की ऐसी अतियों तक ले जा सकती हैं जो पूरी सभ्यता के लिए शर्मिन्दगी और सिहरन की वजह बन जाती हैं। आज व्यक्ति-मानसिकता इन्हीं और ऐसी ही खौफ़नाक सुरंगों से गुजर रही है और इस मानसिकता और परिवेश को बनाने वाले हैं आज के तथाकथित राजनेता और सत्ता के क्रूड दलाल।

सत्तामद में जातीय विद्वेष को उभारते, आतंक, घणा, खौफ के दलदल में 'अंबेडकर बिजनेस' करते सूत्रधारकों के आचरण-व्याकरण को मनोहर पुरी ने न केवल जनसामान्य से जोड़ कर देखा है बल्कि मानवीय चेतना पर चढ़े पशु संस्कारों का निराकरण-शोधन करने का प्रयास किया है। मैं मानता हूं व्यंग्य परिष्कृति है और मनोहर पुरी के व्यंग्य मानव परिष्कृति के जीवन्त दस्तावेज हैं।

श्री मनोहर पुरी का यह साहित्यिक संस्कार बना रहे, वे इसी प्रकार साहित्यिक पथ पर चलते हुए अपना पत्रकारीय धर्म निभाते रहें-यही कामना है। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ-

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा

संसद सदस्य, राज्यसभा

शष शष

नवम दशक का अनूठा व्यंग्य शिल्पी

समकालीन राष्ट्रव्यापी आपाधापी, भ्रष्ट-निकष्ट राजनेताओं के आचरण, सफेदपोश समाज सेवक, श्रमिक हितैषी (?) पूंजीपतियों (अ) धर्म जीवी साम्प्रदायिकों की भीड़ में दयनीय बनी जनता के लिए नसिंह अवतारी भूमिका के साथ ही साहित्य धरातल पर व्यंग्य का अवतरण हुआ है। व्यंग्य कोई आकाश कुसुमी कल्पना मात्र नहीं है, बल्कि ठोस जमीनी अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम रूप है। व्यंग्य में कुनैनी स्वाद है। वह तीखा, कड़वा, कसैला तो है ही साथ ही खुरदरा व चुभन भरा भी होता है। व्यंग्य में प्रक्षेपास्त्र का बोझ होता है जो दुर्बल और कमजोर होता है वह इसका प्रयोग नहीं कर सकता। व्यंग्य के अस्त्र का प्रहारकर्त्ता वैचारिक रूप में पूर्ण स्वस्थ तथा सक्षम होना चाहिये। उसकी विशाल चिन्तना और सामाजिक जागरूकता, राष्ट्रीय दायित्व के प्रति प्रतिबद्धता व नीर क्षीर विवेक की दष्टि ही उसे व्यंग्यकार की संज्ञा धारण करने की योग्यता प्रदान करती है।

नवें दशक के व्यंग्यकारों में सबसे अकेले नजर आने वाले मनोहर पुरी का लेखन कौशल उन्हें अनूठा सिद्ध स्वतः ही कर देता है। उनके-व्यंग्य का कैनवास बहुआयामी तथा सर्वग्राही है। उनकी व्यंग्य-क्षुधा किसी भी विद्रूपता या विडम्बना को वर्ज्य नहीं मानती। जीवन और समाज को प्रभावित करने वाला प्रत्येक पक्ष, यदि दुर्बल तथा रूग्ण है तो मनोहर पुरी का व्यंग्य शॉक ट्रीटमेंट' देने को तत्पर है। 'रौंद कर दौड़िए' 'मेरा भारत महान' तथा सद्यः प्रकाशित 'चंद बीवियों की तलाश' नवें दशक की बहुआयामी विचारोत्तेजक व्यंग्य रचनाओं में स्वीकारी जायेंगी। ऐसी मेरी मान्यता है।

व्यंग्यकार मनोहर पुरी में वैचारिक सम्प्रेषण संसार रचने की अपूर्व विशेषता है। वे दुखती रग को पहचानते हैं। वे उपदेष्टा नहीं है किन्तु एक उपदेशकीय दष्टि की सष्टि वे अवश्य ही रच देते हैं। यह बानगी उनकी भाषा में झिलमिलाती है। भाषा में काव्य की सी तरलता है, तुकमयी सुन्दरता है मध्यकालीन राजस्थानी गद्य की शैली इसी प्रकार की छटा दर्शाती है। मनोहर पुरी की यह मौलिक विशेषता ही उनको व्यंग्यकारों की भीड़ से अलग स्थापित कर देती है। उनके व्यंग्यों में स्थूलता या सस्तापन नहीं है बल्कि वे अनुभवों की प्रामाणिक आंच में पक कर अकाट्य हो जाते हैं। हास्य की चाशनी में व्यंग्य का कुनैन परोसने में मनोहर पुरी सिद्ध हस्त हैं। राजनैतिक विसंगतियां और प्रशासन की कमजोरियां व्यंग्य का प्रमुख क्षेत्र रहा है और व्यंग्यकारों के लिए अखण्ड प्रेरणा स्त्रोत भी। इस प्रेरणा से सर्वाधिक प्रेरित मनोहर पुरी हुए हैं।

मनोहर पुरी की इन व्यंग्य कृतियों में आगामी व्यंग्य सर्जना की अपूर्व सम्भावनायें हैं जो व्यंग्य के सर्जना क्षेत्र में इन्हें प्रथम पंक्ति तक ले जाएंगी।

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी
मोराबादी, हरिहर सिंह रोड़
रांची (बिहार)

तेजाबधर्मी व्यंग्य हस्ताक्षर

विगत दो दशाब्दियों में हिन्दी व्यंग्य लेखन परम्परा में मनोहर पुरी का नाम रोचक किन्तु विचारोत्तेजक 'माइलस्टोन' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। हिन्दी व्यंग्येतिहास में अधिकांश व्यंग्यकार 'परसाई स्कूली लेखन' से प्रेरित तथा प्रभावित होकर लेखन कर्म करते रहे हैं। थोक भाव से लिखे गये इन व्यंग्यों में विषय और शैली गत पिष्टपेषण होता रहा, यही कारण है कि व्यंग्य की विषयगत तीक्ष्णता, वक्रता और सालने की प्रखर धार घिसते घिसते भोथरी प्रतीत होने लगी और रचनायें एक आक्षेप मात्र ही रह गयीं। 'परसाई' शैली के घटाटोप से पथक् रहकर जिन व्यंग्यकारों ने अपनी मौलिकता, अभिव्यक्ति की नूतनता तथा प्रभावों की ताजगी से इस विधा को समद्ध बनाया है उनमें एक महत्वपूर्ण नाम श्री मनोहर पुरी का है।

श्री मनोहर पुरी का व्यंग्यलेखन किसी 'वाद', 'विचारधारा' का पोषक अथवा प्रचारक बनकर प्रस्तुत नहीं होता। उसमें घणा की ईर्ष्या-द्वेषी दष्टि, वाणी वक्रता का कोरा चमत्कार, हास्य की रिमझिम, विशुद्ध मनोरंजन की फुहार, क्रोधी मुद्रा, भावना आवेश की एकांगिता नहीं है। अब तक उनके तीन व्यंग्य संग्रह 'मेरा भारत महान', 'रौंद कर दौड़िए', और 'चंद बीवियों की तलाश' प्रकाशित हो चुके हैं, जिनसे उनकी व्यंग्य सामर्थ्य प्रमाणित हो चुकी है। अपने व्यंग्यों में मनोहर पुरी प्रवचन या उपदेश नहीं करते, किस्सा गोई शैली में कथते नहीं हैं वरन् उनका व्यंग्य-मानस कुरेदता है, झकझोरता है, सोचने समझने और विचारने के लिए विवश करता है। वह पाठकों से वाद-प्रतिवाद नहीं करता बल्कि सीधे-सीधे संवाद करता है।

व्यंग्य का सर्वाधिक उर्वर क्षेत्र राजनीति, धर्म और समाज है। व्यंग्यकार के लिए विसंगतियां, विद्रूपतायें, विडम्बनायें तथा असंगतियां ही वरदायक होती हैं। व्यंग्यकारों का यह सौभाग्य है कि हमारा देश 'भारत महान' किसी युग में 'विश्वगुरु' बना, परवर्ती काल में 'सोने की चिड़िया' कहलाया। विदेशियों ने इस चिड़िया के पंख नोचे और हमारा 'भारत महान' कृषि प्रधान देश हो गया। आजादी प्राप्त करने के उपरान्त 'कृषि' 'कुर्सी' में बदल गयी। यह देश 'कुर्सी प्रधान' हो गया। 'कुर्सी' और 'घोटालों' का धूप छांही सम्बन्ध रहता है। 'कुर्सी' मुखौटाधारी होती है जिसका कोई 'स्थायी भाव' नहीं होता। यहां संचारी शैली से ही 'सत्ता सुख रस' की निष्पत्ति होती है। ऐसे सत्तारस सुखी व्यक्तित्वों के घोटालायी आचार-विचारों को जितनी गंभीरता और सहजता किन्तु सरसता की भूमि पर अनावत करने का संकल्प 'कबीरी मुद्रा' में मनोहर पुरी ने किया है- वह निस्संदेह सराहनीय ही नहीं बल्कि समानधर्मी व्यंग्यकारों के लिए अनुकरणीय भी कहा जा सकता है।

मनोहर पुरी पत्रकार हैं, यायावरी हैं तथा इस महान देश के सजग, सतर्क व सोद्देश्य नागरिक हैं। पत्रकारिता को लोकतंत्रीय व्यवस्था का चौथा अंग माना जाता है। अतएव मनोहर पुरी के व्यंग्य में एक पत्रकार की खोजी 'दीठ' भी है जो उनके लेखकीय कैनवास को विराट आयाम देती है। उनके शीर्षक मात्र चौंकाते ही नहीं हैं बल्कि 'इलेक्ट्रिक शॉक ट्रीटमेंट' भी देते हैं। इक्कीसवीं सदी की ओर ले चलने का दावा करने वाले नेताओं से हमें रौंद कर दौड़ने की ही प्रेरणा मिली। रौंदना है आत्मा को, राष्ट्र हित को, आदर्शों को और दौड़ना है स्वार्थ के लिए, सत्ता के लिए, लोभ और लालच के लिए। चाहे इसके लिए राष्ट्र की एकता को धर्मान्धता,

साम्प्रदायिकता, जात-पांत में ही क्यों न बदलना पड़े। जो जितना इस देश को रौंदेगा वह उतना ही तेज दौड़ेगा।

मनोहर पुरी की व्यंग्य भाषा में एक निश्चित 'राग' है जो उसे काव्यमय बना देता है। इसीलिये इनका व्यंग्य-शूल तुकान्त शैली की पंखुड़ियों में छुप कर चुभन दंश देता है । व्यंग्य विधा के इस उदीयमान रचनाकार के व्यंग्य धरातल पर अंगदी-चरण स्थापन की कामना करता हूँ।

डॉ. नन्दलाल कल्ला
सह आचार्य
हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज०)

सीप में समुद्र : काव्य भंगिमाओं का वैविध्य

निर्मल मिलिंद

हिन्दी गीत-कविता के वत्त में श्री मनोहर पुरी का नाम अभी वह चमक नहीं पा सका है जो पत्रकारिता और व्यंग्य के क्षेत्र में इन्हें हासिल है। कविता संग्रह 'अतीत की परछाइयां' के बाद उनका गीत संग्रह 'सीप में समुद्र' वस्तुतः अनेक प्रचलित काव्य शैलियों, मसलन, कविता, मुक्तक, गजलों, दोहों और मुकरियों का संकलन है। प्रायः १०२ पष्ठों और प्रीति संचय, कालबोध, अनुभव प्रौढ़ि एवं सजन आंच खडों में विभाजित तथा कुल अड़तालीस शीर्षकों में संबंलिक यह संकलन एक नयनाभिराम प्रस्तुति है। इसमें प्रणय सिक्त १३ गीत, कालबोधक १४ रचनाएं एवं अनुभवस्थूल ११ रचनाएं शामिल हैं जिनमें मुक्त छंद शैली की कविताएं भी पिरोयी गयी है। 'सजन आंच' खंड में दो पाए (दोहे)ए गजल, मुक्तक और मुकरियों सहित १० शीर्षकों में रचनाएं समाविष्ट हैं।

हालांकि इनके गीतों के विषय में सुधी समीक्षक डॉ० सुरेश गौतम ने भूमिका में ही लिखा है, 'कुल मिलाकर जहां तक विशुद्ध गीतों का प्रश्न है उनके मानक पर पुरी के गीत खरे नहीं हैं। अधिकांश गीत-मुखड़े बहुत अधिक प्रभावित करते हैं लेकिन गीत-गति पकड़ने से पहले टूट जाते हैं। मात्राओं में असंतुलन है, छांदसिक लय है लेकिन आवेग दीप्ति का अभाव है। तमरसता और घुलनशीलता तो है लेकिन भाव, राग, ताल में एकान्विति नहीं है। संक्षिप्ति और कसावट के अभाव के कारण गीत का आंतरिक रस कम रह जाता है।' किंतु, प्रीति संचय खंड की गीत रचना 'चंदन वन उग आए' बहुत प्रभावशाली बन पड़ी है। इसी तरह 'रिश्ता हुआ दर्द का प्यार से' की अनेक पंक्तियां पुरअसर हैं।

काल बोध खंड में 'कविता और कवि' शीर्षक के अंतर्गत काव्य सजन के संदर्भ और रचना-बाधाएं पुरी की पकड़ में छूट नहीं पायी हैं। उनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति है-

'युग युग से कवि रचना का है करता रहा प्रयास,
युग युग से करती आयी है यह दुनिया उपहास।
बाधाएं आई लेकिन कब रूका काव्य निर्माण,
अरसिक करें विरोध, रसिक करते ही हैं गुणगान।'

अपनी बाहों में इस खंड की एक अन्य महत्वपूर्ण रचना है। इस खंड की रचनाओं से गुजरते हुए डॉ. सुरेश गौतम के इस कथन से सहमत हुआ जा सकता है, 'पुरी का चिन्ताबोध अन्नतः समाजोन्मुखी है। वह उसी के अनुरूप तपता है, कालमुद्राओं को व्याख्यायित करता है और तपन को तरल करने के लिए आइने को बदसूरत नहीं करता अपितु तथ्य सत्यों के अंधकार का रोशनी लेकर पीछा करता है।'

अनुभव प्रौढ़ि, खंड की रचनाएं वैचारिक उन्मेष से उपजी हैं। इसमें 'सूरज दफन नहीं होता है,' 'तीन परिभाषाएं' 'लोकतंत्र की उंचाई' तथा दार्शनिक धरातल पर रची गयी कविता 'एक सफर' शामिल है। 'कागज की नाव' के कतिपय मार्मिक अंश भावुक मन को उद्धेलित करते हैं-

'मां की बात याद करके मुस्कुराता हूं
कागज की नाव बनाता हूं
क्षण भर के लिए ही सही
मां के बिना
अपने बचपन में लौट जाता हूं।

'सजन आंच' में तपी रचनाओं में अपेक्षाकृत अधिक ऊर्जा और आलोक दिखता है। गजल शैली में लिखी अनेक रचनाएं भाव, सजन और बुनावट की दष्टि से ध्यान खींचती है हालांकि कवि ने उन्हें सीधे तौर पर गजल नहीं कहा है। इन पंक्तियों को देखें-

'हम थे अपने वीरानों में गुम हो गए,
तुम जो आए रंगोली सजाने लगे।'

या

'काशी हो कि काबा हो, सिजदा ही तो करना है
यह अपनी ही मस्जिद है, वो अपने शिवाले हैं।'

'यह कैसा करिश्मा है अल्लाह की खुदाई का
कहीं खाया नहीं जाता, कहीं खाने के लाले हैं।'

और भी,

'जो देखा वही लूटा, जो चाहा वही खाया
वे दांतों के मालिक हैं, हम उनके निवाले हैं।'

एक बार इस संकलन से साफ दिखती है कि कवि का काव्य-रचना-कर्म अभी कच्चा है; किन्तु छांदस त्रुटियों का छोड़कर (या छांदस रचना का मोह छोड़कर) कवि पूरी संभावनाओं से लैस है। इस कागज को अच्छा ही मानना चाहिए।

उन्नीस महीने

-डॉ. हरीश नवल

मनोहर पुरी का उपन्यास ''उन्नीस महीने'' इंटरनेशनल प्रकाश द्वारा प्रकाशित किया गया पहला उपन्यास है जो लेखक को हिंदी गद्यकारों की मुख्य धारा में लाने का सामर्थ्य रखता है।

यह एक राजनैतिक कथानक को लेकर बुना गया लघु उपन्यास है जो उन्नीस महीने के कालचक्र को प्रस्तुत करता है। सरदारा सिंह के पुत्रों मोहन, महेन्द्र तथा मैं यानि नरेन्द्र सहगल मुख्य पात्र हैं जिनका साथ कथाविकास क्रम में देवेश, रजनी, जीवन, नलिनी, कामिनी, वीरेन्द्र जी, नैयर परिवार तथा बाटलीवाल परिवार दे रहे हैं।

सत्ता का नशा कैसे भ्रष्ट व्यक्तियों को जन्म देता है, यह कथानक से झलकता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, नौकरशाही, नेता चरित्र, न्यायपालिका का कार्यपालिका के हाथों गुलाम होना तथा अराजकता कथानक के मूल मुद्दे हैं।

झूठ की जीत पर झूठी तरक्की के सच्चे प्रचार की सच्ची गाथा जनता के शोषण का त्रासद बयान करती है। नौकरशाहों के लिए सहगल का कथन है, 'योजनाएं कागजी सिद्ध हो रही हैं। झूठे और चापलेस अफसरों के बहकावे में आकर जो चित्र पेश कर दिया जाता है, उसकी कलई खुलेगी तो क्या परिणाम होंगे।'

भ्रष्ट सत्ताधारियों के चरित्र को उधेड़ता उपन्यासकार पूछता है कि 'आखिर बीमार और गरीब जनता को निरंतर नींद की गोलियां दे-देकर कब तक सुलाया जाता रहेगा।'

उपन्यास में कई चरित्रांकन संस्थाओं के भी किए हैं तथा पुलिस चरित्र, अस्पताल चरित्र, न्यायालय चरित्र औरर शैक्षणिक चरित्र। लेखक का कैनवास बहुत बड़ा है जिस पर लेखक मनोहर पुरी अनेक रंगों का प्रयोग न करके मानो स्कैचिंग करते चलते हैं जिससे अनेक वाक्य उद्धरण बन गए हैं जैसे-

१ए 'इस काल की सबसे बड़ी अनिवार्यता परस्पर विचारों के आदान-प्रदान के मध्य खाई को पाटना है।''

२ए यहां लोतंत्रीय साधनों के राजतंत्र की स्थापना की जाती है। लेखक का पर्यवेक्षण इतना सूक्ष्म है तथा विस्तत है कि इसके मुख्य पात्र ''मैं'' को प्रत्येक व्यक्ति ''कुछ अन्य'' दिखता है। इसी अन्य की तलाश कर लेखक उसका मिलान करने लगता है।

उपन्यास की एक विशेषता इसमें निहित उपमान हैं। पुराने उपमान लेखक को मैले नजर आते हैं। उसके पास ताजे उपमान मौजूद हैं। जो प्रतीकार्य भी देते हैं और अर्थ का विस्तार भी करते हैं, उदाहरणार्थ-मन ही मन थूकना, प्रचार के चश्मे से देखना, आवाज का केबिन में से निकलकर सेक्सन में गूंजना, आदि।

ऐसा नहीं है कि उपन्यास में वर्णन केवल घुटन, संत्रास या त्रासदी का ही हो। मानस और मांसल दोनों की ही प्रेमतरंगें इसमें सहगल और नलिनी के बीच तरंगित हैं। नलिनी एक उफनती नदी है और सहगल एक सुदढ़ चट्टान।

उपन्यास का कवर कलाकार भीम द्वारा बनाया गया है जो चित्ताकर्षक भी है और सार्थक भी।

मेरा भारत महान

मुझे श्री मनोहर पुरी की लगभग सभी व्यंग्य रचनाएं पढ़ने का सुअवसर मिला है। वे मूलतः एक पत्रकार के रूप में विख्यात हैं, यदि वे व्यंग्य की मुख्य धारा से जुड़ते, निश्चय ही हमारी पीढ़ी के व्यंग्यकारों की प्रथम पंक्ति में होते एक खोजी पत्रकार होने के नाते उनकी दष्टि का पैनापन, सूक्ष्म पर्यवेक्षण तथा संसेपण उनके व्यंग्यों में पाया जाता है। राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिपरक उनके व्यंग्य भ्रष्टाचार की जड़ों को खोदते नजर आते हैं। मानवीय रिश्तों की टूटन उन्हें पसंद नहीं तथा सत्यं शिवं सुन्दरं उनकी मूल चेतना है।

वे उपमानों का एक प्रयोग करते हैं और किसी हद तक सपाट व कमानी का भी इस्तेमाल करते हैं, तब भी विसंगतियां विडम्बनाएं और विद्रूप को भली भांति एक्स-रे कर सार्थक रचनाकार होने का सबूत देते हैं।

श्री मनोहर पुरी भाषा के साथ खिलवाड़ करने का रिस्क नहीं लेते। व्यंग्य-भाषा की तलाश उनकी अपेक्षा नहीं प्रतीत होती है।

शैली की दष्टि से उनके व्यंग्य निबंध के निकट हैं जो हास्य का सम्बल नहीं लेते।

उनका प्रथम व्यंग्य-संकलन पाठकों को निराश नहीं करेगा, अपितु उनकी शक्ति से परिचित कराएगा।

श्री मनोहर पुरी एक सुप्रतिष्ठित पत्रकार, व्यंग्य निबन्धकार और कवि हैं। पत्रकार तो वे बहुत मंज हुए हैं और लगभग तीन दशक से अनेक अखिल भारतीय स्तर के पत्रों में कार्य कर चुके हैं उनका यह निबन्ध संग्रह यह भी सिद्ध करता है कि वे एक श्रेष्ठ व्यंगय लेखक भी हैं। इसके पहले पर्यटन, पर्वतारोहण और दर्शन शास्त्र आदि अनेक विषयों पर उनकी पुस्तकें निकल चुकी हैं।

मेरा भारत महान के कवर के पहले फ्लैप पर व्यंग्य लेखक डॉ. हरीश लाल उनके विषयों में लिखते हैं-''मनोहर पुरी एक ऐसे सजग और चिंतनशील कलाकार हैं जो अपने स्पष्ट दष्टिकोण और विचार-धारा के तरह राजनैतिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों की व्यंग्यात्मक आलोचना करते हैं।''

इस पुस्तक में ये व्यंग्य लेख अब छपे हैं परन्तु इनका लेखन काल लगभग पिछले दो दशकों का है। इसलिए इसमें इस काल की विभिन्न समस्याओं पर लेख हैं। देश की राशन व्यवस्था जिसमें सड़ा गला अनाज मिलता है, इस देश की तथाकथित उस पत्रकारिता की भी श्री पुरी ने पोल खोली है जो नेताओं की चम्चागिरी के बल पर चलती है। देश की आवास व्यवस्था जिसमें आदमी एक अदद मकान के लिए सारी जिन्दगी चक्कर काटता है उस पर भी लेखक ने व्यंग्य किए हैं।

लेखक की भाषा शैली चुस्त ओर दुरूस्त है और अक्सर उसमें पारसी नाटकों की सी मुहावरेदारी और अनुप्रासिकता मिलती है। इसी तरह पुरी साहब की शैली में ''स्टेशन पर सोये तो पुलिस की सत्ता है डंडा। हर घाट पर कब्जा किए बैठा है भाई पंडा मार खाओ और बाल से भी जाओ ऐसा है यहां का धंधा।''

विषयों के शीर्षक भी सटीक हैं। उनमें भी एक गहरी व्यंग्यात्मकता का पुट है। आवास समस्या पर लिखे लेख का शीर्षक कन्हैयालाल सहगत के एक गीत के मुखड़े को रखा गया है ''एक बंगला बने न्यारा।''

बहरहाल उनसे अपरिचित पाठक भले ही उनकी किताब से उनको छुपा रूस्तम समझे, जानने वाले जानते हैं कि वे इस अखाड़े से पुराने उस्ताद हैं।

पुस्तक का गेटअप, छपाई, कागज और सज्जा सभी कुछ लेखक की सुरूचि और प्रकाशक के परिश्रम का परिचायक है।

डॉ. कृष्ण बिहारी लाल

अंदर का सच (उन्नीस महीने)

-जनार्दन मिश्र

अनेक विधाओं में साहित्य सजन करने वाले मनोहर पुरी के उपन्यास उन्नीस महीने में आपातकाल की हकीकत को बड़ी ही संजीदगी से मर्मस्पर्शी शैली में अभिव्यक्त किया गया है। जिस कालखंड को विनोबा भावे ने 'अनुशासन पर्व' कहा था, उसके अंदर का सच कितना घिनौना, भ्रष्ट, आततायी एवं निर्मम था, का बयान भुक्तायोगी या प्रत्यक्षदर्शी ही कर सकता है। इस पुस्तक में इस लक्ष्य का उजागर करने का प्रयास किया गया है कि उन्नीस महीने के अंदर कैसा हजारों लोगों के स्वप्न सदा-सदा के लिए दफन कर दिए गए थे। सरकारी मौखिक आदेश लोगों पर इस कदर कहर बरसा रहा था कि कुछ लोग अंग्रेजों के दमन चक्र से भी अधिक खौफनाक दौर से गुजरने लगे थे।

इस उपन्यास की शुरूआत, हिन्दुस्तान विभाजन के बाद दिल्ली आकर बसे एक मध्यमवर्गीय परिवार की कहानी से शुरू होती है। लाहौर से पूरी तरह से उजड़कर आया यह परिवार काफी जद्दोजहद् के बाद कमाने खाने की स्थिति में आ गया था, जबकि घर का मुखिया सरदारा सिंह अपने मन में अपने घर की लालसा लिए ही इस दुनिया से चल बसा था। सरदारा सिंह का छोटा बेटा मोहन सिंह, बैंक में क्लर्क की सर्विस पा गया था तथा बंगाल की विस्थापित परिवार की लड़की अपर्णा से उसका विवाह हो गया था। अपर्णा बैंक में ही आफिसर थी। दिल दिमाग से दुरुस्त एवं जिंदादिल मोहन सिंह बैंक में कार्यरत कर्मचारी यूनियन का सक्रिय कार्यकर्ता बन गया था तथा उच्चाधिकारियों द्वारा तरह तरह के प्रलोभन देने के बावजूद वह अपने अटल दरादे से विचलित नहीं हो सका, उस मोहन सिंह को आपातकाल के दौरान अफसरों के इशारे पर गिरफ्तार कर जेल में बड़ी बेरहमी से ठूंस दिया गया था। उस पर तरह तरह के मनगढंत आरोप लगाए गए। अंग्रेजों की न्याय व्यवस्था की तरह एक केस से मुक्त करते ही उससे बड़े अपराध की जाल बुनकर दूसरा केस शुरू हो जाता था। मोहन सिंह जैसे हजारों लोग, ईमानदार नेता, कार्यकर्ता तथा क्रूर व्यवस्था के विरूद्ध बोलने वाले लोगों को जेल की चहारदीवारी में बंद कर दिया जाता था। भारतीय जेल की नारकीय व्यवस्था उन दिनों में और बढ़ गई थी जिसके फलस्वरूप लोग तरह तरह की बीमारियों से ग्रसित हो गए थे। शासन

व्यवस्था की ये हालत थी कि तत्कालीन पधानमंत्री से जुड़े हर आदमी नायक बन गया था तथा उनके एवं सिपहसालारों के मौखिक आदेशों को बड़े से बड़ा अधिकारी किसी तरह से पूरा करने में ही अपनी भलाई समझता थे। फिर छोटे युवराज के आदेश पर नसबंदी करने का आलम इस तरह असंगत एवं घिनौना हो गया था कि वद्ध, कुंवारी तथा नव इम्पतियों को भी भेड़ बकरियों की तरह पकड़ कर भोंडे तरीके से नसबंदी कर दी जाती थी। वहां विनती, चीखने, चिल्लाने का कुछ भी असर नहीं पड़ता था। अनेक लोग ऐसे जख्मों को लेकर घर पर छटपटाते रहते, या चिकित्सा के अभाव में मर गए पर ऐसी दर्दभरी कहानी को प्रशासन से जुड़े लोग किसी भी हालत में सुनने को तैयार नहीं थे, जो लोग सुनने वाले थे उन्हें षड़यंत्रकारी एवं देशद्रोही करार देकर जेलों में ठूंस दिया जाता था। सफाई के नाम पर दिनभर मजदूरी करके जीवन यापन करने वालों को बेघर किया जा रहा था तथा वास्तविक जननायाकों, देशभक्तों को जनद्रोही तथा देशद्रोही करार दिया जा रहा था।

इस उपन्यास में कुछ नाम चरित्र चित्रण के अनुसार परिवर्तित करने के बजाय ज्यों का त्यों दिया गया है। ये नाम उस दौर में शीर्ष पर थे यही कारण रहा होगा कि उस पद एवं चरित्र के अनुकूल किसी और का नाम न देना उपन्यास कार की विवशता रही है। न्याय का आलम इतना बिगड़ गया था कि न्यायपालिका को कार्यपालिका की दासी बना दिया गया था। न्यायवयवस्था के माथे पर बहुत बड़ा कलंक लग गया था। लोगों को विश्वास हो गया था कि न्याय के नाम पर वहीं होगा जो सरकारी तंत्र चाहेगा। अंग्रेजों की सैकड़ों वर्ष की गुलामी को जैसे भुलाया नहीं जा सकता उसी तरह उन्नीस महीने के दर्द उत्पीड़न एवं संत्रास को भुक्तभेगी जनता, नेता आजीवन कभी नहीं भूला सकते हैं। तानाशाही के क्रूर पंजों में उस दौर का जिंदादिल इन्सान इस कदर जलील एवं प्रताड़ित किए जाते थे कि सामने वाला मूक दर्शन बन जाता था।

समय ने पलटा खाया तथा जयप्रकाश नारायण ने सफल अभियान के तहत एक नया विहान हुआ। शुरू से अंत तक इस उपन्यास में छाये रहने वाला मोहन सिंह सत्ता परिवर्तन के बाद सत्ता में कहीं भागीदारी की बात नहीं करता, उसे तो बस इसी बात की खुशी है कि अपनी आहूति से उसने अपना अभीष्ट पा लिया है तथा इस तरह के उन्नीस महीने फिर कभी न आयें, यही उसकी कामना है। ऐतिहासिक खंड होने के कारण इस तरह के उपन्यासों में कुछ स्वभाविक कमियां पात्रों के नामकरण के चलते ही आ जाती हैं जो इस उपन्यास में भी है। जहां तक कथावस्तु के चुनाव का सवाल है। आपातकाल को उपन्यास के माध्यम से व्यक्त करना उपन्यासकार का साहसिक कार्य कहा जाएगा। सरल, सहज शब्दों के प्रयोग से कथा के प्रवाह में गतिशीलता आई है एवं स्थान विशेष के वर्णन में भी लेखक ने पूरा ध्यान रखा है।

उन्नीस महीने

-रमेश गौतम-

पारिवेशिका यर्थाथ का साक्षात्कार करते हुए अपने समय के अभावों से दो चार होना सजन धर्म और रचनात्मक ईमानदारी है। वैसे सापेक्षिक रचनाकार अपने अभावों से हमेशा संघर्षरत रहकर अभीष्ट मूल्यों की खोज में सदा से ही तत्पर रहा है। बिना किसी लम्बी भूमिका के मैं यह बेवाक कह सकता हूं कि यह खासियत श्री मनोहर पुरी के रचनाकर्म में दिखाई देती

है। उनमें राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना की आकांक्षा बड़ी प्रबल है जो उनकी रचनानुभूति को स्थापित प्रदान करने में पूरी समर्थ है।

आज विपुल मात्रा में व्यक्तिवादी एवं अस्तित्ववादी तथाकथित 'मार्डन' विषयों को लेकर उपन्यास कहानियों का प्रकाशन हो रहा है। किन्तु महानगरीय समाज और व्यक्ति को बनावटी, यथार्थवादी चित्रित करने के कारण उनका प्रभाव क्षणजीवी ही है। इस सन्दर्भ में रचनानुभूति के स्थायित्व का प्रश्न बड़ा अहम् और विचारणीय है और रचनानुभूति का यह स्थायित्व टिका है द्वन्द्व की सार्थकता में। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में आपातकाल के जख्म़ बड़े गहरे हैं। इस बिन्दु का ध्यान देने र्योय है कि श्री मनोहर पुरी ने जिस कथ्य को अन्तर्मन में रखाकर 'उन्नीस महीने' में जिन कथा-घटनाओं का चयन किया है, वह बड़ी सार्थक हैं अर्थात् राष्ट्रीय जीवन की त्रासदी से पैदा हुई सार्थक द्वन्द्व की परिस्थितियों में लोकतांत्रिक संस्कारों का भारतीय जनमानस अपने आप ही 'उन्नीस महीने' के रचनात्मक प्रभाव को सहज ही आत्मासात कर लेता है। श्री मनोहर पुरी द्वारा 'क्रिएट' किया गया यह रचनानुभव स्थायी और टिकाऊ है, इस में संदेह नहीं और यही है इस औपन्यासिक कृति की रचनानुभूमि का स्थायित्व और कालजयी प्रासंगिक अर्थकता।

श्री मनोहर पुरी का रचनात्मक संकल्प भविष्य के प्रति समर्पित है, उपन्यास समर्पित है उस नई पीढ़ी को जिसे आपात्काल का संत्रास नहीं सहना पड़ा। भारतीय राजनीतिज्ञों का भ्रष्ट व्यवहार और आचरण तथा उनका सत्तालोलुप एकाधिकारवादी संस्कार लेखक को आज भी भविष्य के प्रति सशंकित करता है इसलिए अपने इस लेखन श्री मनोहर पुरी का उद्देश्य 'उन्नीस महीने' की उस काली रात की दास्तान को दोहराना भर नहीं है जिसने भारतीय प्रजातंत्र के सूर्य को अपनी आतंक और अन्धकार-छाया में उगने नहीं दिया। रचनाकार सेचत करता है अपनी भावी पीढ़ी को, सत्ता संस्कृति की उस अधिनायकवादी मनोवत्ति से जिससे राजनीतिक प्रभुता और सत्ता को अपने परिवार के घेरे तक सीमित रखने की आकांक्षा से आगे कोई तानाशाह भारत के भविष्य की 'नसबंदी' कर उसे पुंसत्वहीन न बना सके, उसकी बुलडोजर संस्कृति अपने ही देश और अपने ही शहर में लोगों को विस्थापन का अभिशाप न दे सके तथा वह देश की नागरिक स्वतन्त्रता का हनन न होने की आगे से गारंटी दे, होगा ये सब तभी जब नई पीढ़ी समाज और देश के वस्तु यथार्थ को जाने, और समझे अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों की सीमा, क्योंकि किसी भी देश के सुनहरे भविष्य के लिए यह बहुत जरूरी है। अतः कहना चाहिए कि 'उन्नीस महीने' आपात्काल के राजनीतिक उत्पीड़न का ही दस्तावेज नहीं बल्कि जनतांत्रिक व्यवस्था में आस्था का आख्यान है।

जिस वस्तु यथार्थ को जानने और समझने की बात मैंने की है उसे समूची वास्तविकता और गहराई से पकड़कर उभारने की क्षमता का प्रदर्शन 'उन्नीस महीने' के कथाकान ने किया है और यह शक्ति उसमें आई है परिस्थितिजन्य यर्था का सामना करने से इसी विशेषता के कारण यह उपन्यास कथा भोगे हुए अर्थात् आनुभाविक यथार्थ का कथन बन पड़ी है और यह शक्ति उसमें आई है परिस्थितिजन्य यथार्थ का समाना करने से इसी विशेषता के कारण यह उपन्यास कथा भोगे हुए अर्थात् आनुभाविक यथार्थ का कथन बन पड़ी है। भारतीय इतिहास का यह दुर्घटित यथार्थ लेखक का, मेरा अपना या किसी अन्य का ही नहीं समूचे भारत की आपबीता यंत्रणा है, भारतीय प्रजातंत्र के स्थापित मान-मूल्यों को तहस-नहस कर देने वाली त्रासदी है, श्री मनोहर पुरी ने तो केवल अपने रचनात्मक कौशल के साथ उन मुक्त अनुभवों का तटस्थ

सत्यापन किया है। आपात्काल, नहीं, या यूं कहें कि एक व्यक्ति की जनतंत्र विरोधी आकांक्षा से जन्में आतंक कला के प्रजाउत्पीड़न की घटनात्मक श्रंखला एक सुविचारित चिन्तन और संवेदन के साथ 'उन्नीस महीने' के उपन्यास कलेवर में श्री मनोहर पुरी ने संयोजित की है।

मनोहर पुरी का सर्जन व्यक्तित्व संघर्षों से तटस्थ विराम नहीं लेता बल्कि वह तो लोकतांत्रिक मूल्यों का राजनीतिक दर्शन लेकर अधिनायकवादी शोषण के खिलाफ जनमत को संघर्ष के रास्ते पर अग्रषित करने में सक्रिय भूमिका निभाता हैं लेखक जानता है कि अंग्रेजों की साम्राज्यवादी मनोवत्ति से लोहा नेने वाली जनमानसिकता का उबाल अब ठंडा पड़ चुका है ओर उस उत्साह को प्रयत्नपूर्वक फिर से जगाना पड़ेगा क्योंकि अब लड़ाई विदेशियों से नहीं, लोक सत्ता की फिर से स्थापना के लिए हमें अपने ही रक्त बीजी राक्षसी हिस्सों की जन विरोधी मानसिकता से लड़नी है और सन्देह नहीं जनतांत्रिक भारत में जनविरोधी मानसिकता से लड़नी है और सन्देह नहीं जनतांत्रिक भारत में संविध्याान से खेल करने वाले जनशत्रुओं से लोकतांत्रिक मूल्यों की यह लड़ाई अनवरत चलती रहनी है, चल भी रही है। आपात्काल में यह आजादी की दूसरी लड़ाई थी जो हमने अपने ही विकृत अंश से लड़ी। सरकार की अभानुषिक एवं आतंकित कर देने वाली गतिविधियों से बेबस, समझौतापरस्त, उदासीन जनता को लेखक ने विद्रोह चेतना का हथौड़ा मारकर जगाया है, जिसे वह क्रान्ति का लघु दर्शन मानता है, ताकि संसदीय प्रजातंत्र का मजाक न बन सके, अभिव्यक्ति की आजादी कुंठित न हो और व्यक्ति के मौलिक अधिकार सुरक्षित रहें। यह सब लेखक ने तब भी किया जब पूरा देश बीस सूत्रीय कार्यक्रमों का साइन बोर्ड बन चुका था, सरकारी प्रचार तन्त्र के नारों की घुट्टी पिलाकर जनचेतना को संज्ञा शून्य बना देने की कोशिश की थी। अत्याचार, आतंक, उत्पीड़न की उस भ्रम-निशा में रचनाकार ने संघर्षशील चेतना के संवाहक पात्रों की परिकल्पना करके और स्वयं भी उस संघर्ष का हिस्सा बनकर लोकतंत्र के सूरज को दफन नहीं होने दिया। मैं कहना चाहता हूं कि 'भारत दुर्दशा' की 'आब्जेक्टिव कंडीशन्स' आज और अब भी वहीं है और श्री मनोहर पुरी इन 'कंडीशन्स' में 'इनीशिएटिव' लेकर उसे 'सब्जेक्टिव' नेतत्व प्रदान करने की इच्छा से प्रेरित है, क्योंकि यह मात्र संयोग नहीं कि आपात् काल के उन्नीस साल बाद उन काले 'उन्नीस महीनों का सजनात्मक आधार के रूप में ग्रहण किया जाए। क्या आज भी हम नौकरशाही और भ्रष्ट सरकार का गठनबन्धन नहीं देख रहे? भ्रष्ट व्यवस्था का अंग बनने के लिए क्या आज का व्यक्ति मजबूर नहीं है? क्या आज पूरी तरह से राजनीति और प्रशासन का अपराधीकरण नहीं हो चुका? सत्ता का आतंक क्या आज हमारे सिर चढ़कर नहीं बोल रहा? न्यायिक विडम्बनाओं से क्या आज का व्यक्ति और समाज त्रस्त नहीं है? क्या भारतीय जनता चुनावों की आड़ में ठगी नहीं जा रही है? और इन सबके रहते हमारे सुविधा येगी तथाकथित बुद्धिजीवियों की जन जीवन को छलने वाली निष्फल वैचारिक कसरत क्या अभी भी जारी नहीं है।

कहना होगा कि इन मूलभूत प्रश्नों के साथ आज भी हमें लोकतांत्रिक मूल्यों के अस्तित्व की लड़ाई लड़नी है। आज जबकि समकालीन कथा साहित्य में पश्चिमी यह अन्तर्यात्रा लेखक द्वारा किया गया कटु यथार्थ से साक्षात्कार भी है और वर्तमान के मूल्यगत द्वन्द्वों से जूझती हुई भारतीय जनता को अभीष्ट राह का दिग्दर्शन भी।

'उन्नीस महीने' के इस लोकार्पण समारोह में इस उपन्यास के बारे में कहने की गुजाइश नहीं। अतः उपन्यास विद्या के अन्य-अनेक पक्षों को छोड़ मैं एक महत्वपूर्ण बात की ओर 'उन्नीस महीने' के पाठकों को ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और वह यह कि लेखका का, जो

उपन्यास में एक पात्र भी है, मिलने वाले हर व्यक्ति को व्यक्तित्व के पीछे 'अन्य' को देखने की रचनात्मक संकल्पना औपन्यासिक उद्देश्य में बड़ी सार्थक है क्योंकि भय की रात अर्थात् आतंक काल में मुर्दादिली संसार के बीच 'जीवन्त आदमी' ही खतरों से पार ले चलने की अभीप्सा अपने अन्दर पालता है और 'उफनती नदी' ही भ्रष्ट व्यवस्था की कल्पना को साकार करने में सहायक हो सकती है। नदी के बहाव की इस अग्रगति को जीवन्त बनाए रखते हुए 'बहते हुए झरने' की तरह साफ और 'सुदढ चट्टान' की तरह मजबूत भारत का बिम्ब रचनाकार के जहन में निश्चित ही है। अतः इस उपन्यास के रूप में राष्ट्रीय आकांक्षाओं का संकल्पित लेखन भी मनोहर पुरी के सजन-संसार में संभव हुआ है और आगे भी राष्ट्रीय संकल्प की रचनात्मक ऊर्जा द्वारा उनसे साहित्य में इसी भूमिका की अपेक्षा है।

उन्नीस वर्ष बाद उन्नीस महीने

-हरीश नवल

बकौल लेखक मनोहर पुरी 'उन्नीस महीने' उस काली रात की दास्तान है जिसने उन्नीस महीने तक प्रजातंत्र के सूर्य को उगने ही नहीं दिया।

मनोहर पुरी एक रचनाकार हैं, शब्द के प्रति पूर्णतः समर्पित। प्रस्तुत उपन्यास उन्हें हिंदी गद्य लेखकों की मुख्य धारा में लाने के लिए सक्षम सेतु की सम्भावनाओं से पूरित है।

यद्यपि लेखक ने अपने इस उपन्यास में इस बात का उत्तर दिया है कि आपात स्थिति के इतने वर्षों बाद यह दस्तावेज क्यों ? परन्तु उनके उत्तर की बजाय मुझे मिलान कुंदेश से बेहतर व संतोषजनक जवाब मिल सका। वे लिखते हैं, ''.....आशावाद और निराशावाद इन दो शब्दों से मैं बहुत घबराया हूं। मुझे क्या पता कि मेरे देश का बेड़ा पार होगा या डूब जाएगा। मुझे यह भी पता नहीं होता कि मेरा कौन सा पात्र सच्चाई पर है और कौन सा पथभ्रष्ट है। मैं तो कहानियां बुनता हूं। लोग कितने बुद्धि हैं कि हर बात के लिए एक उत्तर चाहते हैं। उपन्यास की बुद्धिमता प्रश्न उठाने में निहित है। उपन्यास हमें दुनिया को एक प्रश्न की शक्ल में स्वायतता सिखाता है। अधिनायकों की दुनिया प्रश्नों के बजाय बने बनाए उत्तरों की दुनिया होती है। वहां उपन्यास के लिए कोई जगह नहीं है.....।'

बहरहाल मनोहर पुरी का उपन्यास जगह बनाने की प्रक्रिया में है। देश की राजनैतिक पैबंदों से उघड़ी नंगई खुल कर सामने आ रही है। तानाशाही मरी नहीं है-संसद के गलियारों से लेकर हमारी गलियां तक घूम रही है।

सरदारा सिंह के पुत्रों मोहन सिंह, महेन्द्र सिंह तथा 'मैं' यानि नरेन्द्र सहगल पात्र के इर्द गिर्द सिमटी दुनिया के कथा तत्व लिया गया है। देवेश, रजनी, जीवन, नलिनी, कामिनी, वीरेन्द्र जी, कल्पना अपर्णा, संत कौर सहित नैय्यर परिवार और बाटलीवाल परिवार के सदस्य इस उपन्यास को कथानक दे रहे हैं।

इस महत्वपूर्ण कथानक में समाहित है आपात काल के उन्नीस महीने की कथा तथा उसकी वर्षों पूर्व की पूर्वपीठिका बल्कि एक जीवन्त दस्तावेज जिसमें लेखक एक समाज विज्ञानी के रूप में अवतरित है। उसकी पर्यवेक्षण दष्टि में इतिहास, भूगोल, समाज, अर्थ, धर्म आदि अनेक बोध है।

इन बोधों से उभरता है कथा का उत्स। मूल उत्स है-एक परिवार की राजलिप्सा का पर्दाफ़ास जो मौलिक अधिकारों का हनन अनुचित नहीं मानता। कैसे लिप्सा राजतंत्र को भ्रष्टतंत्र में तब्दील करती चलती है।

इसके अतिरिक्त उपन्यासकार की आंख नौकरशाही के स्वरूप पर दष्टिपात करती चलती है। झूठ की नींव पर झूठी तरक्की के सच्चे प्रचार की सच्ची गाथा उन उन्नीस महीनों की त्रासदी को उभर कर रख देती है जब स्वतंत्र देश में हम इस गुलामों से भी बदतर स्थिति में थे।

बॉस से बात करते करते नरेन्द्र सहगल देश की स्थितियों का एक्सरे करते हैं..... अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है ही नहीं तो उसकी बात की ही क्यों जाती है?.....झूठे नारों और आंकड़ों के सहारे किसी को भ्रमित तो किया जा सकता है पर इनसे किसी का पेट तो नहीं भरा जा सकता।.....क्या हमें पता नहीं है कि देश कितनी शोचनीय स्थिति में पहुंच चुका है ? क्या यह किसी से छिपा है कि हमारी सारी योजनाएं कागज़ी सिद्ध हुई हैं? क्या वे यह नहीं जानते कि झूठे और चापलूस अफसरों के बहकावे में आकर देश का जो चित्र जनता के सामने पेश किया जा रहा है उसकी जब कलई खुलेगी तो क्या परिणाम होगा।

सत्ताधारियों का चरित्र इन शब्दों में देखिए-''यह सत्ताधारी दल सरकार के रूप में दशकों से बीमार और गरीब जनता को निरंतर नींद की गोलियां दे देकर सुलाता रहा है। कभीी यह गोली पंचवर्षीय योजना द्वारा 'शुगर कोटेड' रही तो कभी 'गरीब हटाओ' के नारे के कैप्सूल में तथा आश्वासनों की 'स्ट्रिप्स' में पैक करके दी जाती रही है।

लेखक ने इस उपन्यास में कई चरित्रांकन संस्थाओं के भी किए है यथा पुलिस चरित्र 'अस्पताल चरित्र', न्यायालय चरित्र', शैक्षणिक चरित्र आदि। यानि लेख के पास एक बहुत बड़ा कैनवास है। लेखक अनेक रंगों का प्रयोग न करके मानो स्केचिंग करता चलता है। इस शब्द स्केचिंग में वह अनेक वाक्यों की ऐसी संरचना करता है जो उद्धरण बन गए हैं :-

''वास्तव में इस काल की सबसे बड़ी अनिवार्यता परस्पर विचारों के आदान-प्रदान के मध्य खाई को पाटना है।''

''दिल्ली शायद केवल विदेशी नादिरशाओं के कत्ले आम और अत्याचार देखने के लिए ही अभिशप्त नहीं थी बल्कि अपने बंधु बाधवों के जुल्म देखना भी उसकी किस्मत में लिखा था।''

लोकतंत्रीय साधनों से राजतंत्र की स्थापना की गई।

''मानव स्वभाव से ही बंधनों में बांधना नहीं चाहता..... कैसी विडम्बना है कि पूरा देश बंदी गह में परिवर्तित कर दिया गया है।''

लेखक का पर्यवेक्षण इतना सूक्ष्म और विस्तत है कि उसके मुख्य पात्र 'मैं' को प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ अन्य दिखता है। इसी अन्य की तलाश कर लेखक उसका मिलान करने लगता है।

इस उपन्यास की एक विशेषता इसमें निहित उपमान हैं। पुराने उपमान लेखक को मैले नज़र आते हैं, उसके पास 'फ्रेश' उपमान मौजूद हैं जो प्रतीकार्थ भी व्यंजित करते हैं तथा अर्थ का विस्तार भी। ऐसे कुछ उदाहरण दष्टव्य है :-

'मन ही मन थूकना', 'प्रचार के चश्मे से देखना', 'आवाज़ का केबिन में से निकल कर सेक्शन में गूंजना', साहब के कक्ष में ऐसे घुसना जैसे आत्महत्या के लिए गैस चैम्बर में जाना हो।''

मनोहर पुरी का उपन्यासकार एक चिन्तक, पत्रकार, पर्यवेक्षक, दार्शनिक और छायाकार ही नहीं, छिद्रान्वेषी एक्सरे-कार भी है।

पुस्तक में पष्ठ ८६ से पष्ठ १२३ तक विचार, चिन्तन अबाध गति से अंकित है। इनमें न्यायपालिका का कार्यपालिका का पिछलग्गू क्योंकर बनना विचारणीय है।

देवेज और सहगल की बातचीत -अथातो जिज्ञासा' शैली में प्रश्नोत्तर को लिए हुए है।

पात्र वीरेन्द्र शर्मा की डायरी कांग्रेस की घटती साख की खासी व्याख्या करती है।

ऐसा नहीं कि 'उन्नीस महीने' के वर्णन केवल संत्रास, घुअन और त्रासदी का ही हो, मानस और मांसल दोनो की ही प्रेम-तरंगे इसमें सहगल और नलिनी के मध्य तरंगित होती हैं। पष्ठ साठ इकसठ पर अंकित जीवन और रजनी का शारीरिक सम्मिलन चित्र बहुत सुंदर और स्वाभाविक गढ़ा गया है। नलिनी को एक उफनती नदी कहा गया जो पूरे वेग से बहती है और रजनी एक सुदढ़ चट्टान का सामना करने के लिए सदैव तैयार रहती है।

उपन्यासकार का कवर पष्ठ चित्ताकर्षक होने के साथ साथ अत्यंत अर्थपूर्ण भी है।

इंटरनेशनल पब्लिशर्स (इंडिया) द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'उन्नीस महीने' में आपात काल का यह लेखा जोखा गुम्फित है जो आज भी हमें भविष्य के प्रति सशंकित रखता है। भले ही वह आपात स्थिति के उन्नीस वर्ष बाद प्रकाश में आया है।

आपातकाल की याद 'उन्नीस महीने' से ताजा

राजधानी में पिछले दिनों स्पीकर हाल में आपातकाल के दर्दनाक उन्नीस महीनों पर आधारित उपन्यास का लोकार्पण श्री कुप्प श्री सुदर्शन ने किया। उपन्यास के रचनाकार श्री मनोहर पुरी ने 'उन्नीस महीने' रचना से उस याद को ताजा करा दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री कुप्प सी० सुदर्शन एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री मुरली मनोहर जोशी द्वारा द्वीप प्रज्जवलन से हुआ। तत्पश्चात महिला महाविद्यालय बवाना की छात्रा पारूल ने सरस्वती वन्दना का गायन किया। दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रवक्ता डॉ० पूरन चन्द टण्डन ने श्री सुदर्शन एवं जोशी जी के व्यक्तित्व का परिचय दिया। श्री मनोहर पुरी के बड़े भाई श्री बलराज पुरी ने आपात काल के दौरान अपने अनुभव को सुनाये।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० रमेश गौतम और हिन्दू कॉलेज में हिन्दी विभाग में रीडर डॉ० हरी नवल ने उपन्यास की समीक्षा करते हुए आलेख पाठ प्रस्तुत किये। डॉ रमेश गौतम ने कहा कि श्री मनोहर पुरी ने जिस कथ्य को अन्तर्मन में रखकर 'उन्नीस महीने' में जिन कथा-घटनाओं का चयन किया है,

अनूठा व्यंग्य शिल्पी

मनोहर पुरी में वैचारिक सम्प्रेषण संसार रचने की अपूर्व विशेषता है। वे दुखती रग को पहचानते हैं। वे उपदेष्टा नहीं है किन्तु एक उपदेशकीय दष्टि की सष्टि वे अवश्य ही रच देते हैं। यह बानगी उनकी भाषा में झिलमिलाती है। भाषा में काव्य की सी तरलता है, तुकमयी सुन्दरता है मध्यकालीन राजस्थानी गद्य की शैली इसी प्रकार की छटा दर्शाती है। मनोहर पुरी की यह मौलिक विशेषता ही उनको व्यंग्यकारों की भीड़ से अलग स्थापित कर देती है। उनके व्यंग्यों में स्थूलता या सस्तापन नहीं है बल्कि वे अनुभवों की प्रामाणिक आंच में पक कर अकाट्य हो जाते हैं। हास्य की चाशनी में व्यंग्य का कुनैन परोसने में मनोहर पुरी सिद्ध हस्त हैं। राजनैतिक विसंगतियां और प्रशासन की कमजोरियां व्यंग्य का प्रमुख क्षेत्र रहा है और व्यंग्यकारों के लिए अखण्ड प्रेरणा स्त्रोत भी। इस प्रेरणा से सर्वाधिक प्रेरित मनोहर पुरी हुए हैं।

व्यंग्यकारों में सबसे अकेले नजर आने वाले मनोहर पुरी का लेखन कौशल उन्हें अनूठा सिद्ध स्वतः ही कर देता है। उनके-व्यंग्य का कैनवास बहुआयामी तथा सर्वग्राही है। उनकी व्यंग्य-क्षुधा किसी भी विद्रूपता या विडम्बना को वर्ज्य नहीं मानती। जीवन और समाज को प्रभावित करने वाला प्रत्येक पक्ष, यदि दुर्बल तथा रूग्ण है तो मनोहर पुरी का व्यंग्य शॉक ट्रीटमेंट' देने को तत्पर है।

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी
मोराबादी, हरिहर सिंह रोड़
रांची (बिहार)

तेजाबधर्मी व्यंग्य हस्ताक्षर

हिन्दी व्यंग्य लेखन परम्परा में मनोहर पुरी का नाम रोचक किन्तु विचारोत्तेजक 'माइलस्टोन' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। हिन्दी व्यंग्येतिहास में अधिकांश व्यंग्यकार 'परसाई स्कूली लेखन' से प्रेरित तथा प्रभावित होकर लेखन कर्म करते रहे हैं। थोक भाव से लिखे गये इन व्यंग्यों में विषय और शैली गत पिष्टपेषण होता रहा, यही कारण है कि व्यंग्य की विषयगत तीक्ष्णता, वक्रता और सालने की प्रखर धार घिसते घिसते भोथरी प्रतीत होने लगी और रचनायें एक आक्षेप मात्र ही रह गयीं। 'परसाई' शैली के घटाटोप से पथक् रहकर जिन व्यंग्यकारों ने अपनी मौलिकता, अभिव्यक्ति की नूतनता तथा प्रभावों की ताजगी से इस विधा को समद्ध बनाया है उनमें एक महत्वपूर्ण नाम श्री मनोहर पुरी का है।

श्री मनोहर पुरी का व्यंग्यलेखन किसी 'वाद', 'विचारधारा' का पोषक अथवा प्रचारक बनकर प्रस्तुत नहीं होता। उसमें घणा की ईर्ष्या-द्वेषी दष्टि, वाणी वक्रता का कोरा चमत्कार, हास्य की रिमझिम, विशुद्ध मनोरंजन की फुहार, क्रोधी मुद्रा, भावना आवेश की एकांगिता नहीं है। अपने व्यंग्यों में मनोहर पुरी प्रवचन या उपदेश नहीं करते, किस्सा गोई शैली में कथते नहीं हैं वरन् उनका व्यंग्य-मानस कुरेदता है, झकझोरता है, सोचने समझने और विचारने के लिए विवश करता है। वह पाठकों से वाद-प्रतिवाद नहीं करता बल्कि सीधे-सीधे संवाद करता है।

` सत्तारस सुखी व्यक्तित्वों के घोटालायी आचार-विचारों को जितनी गंभीरता और सहजता किन्तु सरसता की भूमि पर अनावत करने का संकल्प 'कबीरी मुद्रा' में मनोहर पुरी ने किया है- वह निस्संदेह सराहनीय ही नहीं बल्कि समानधर्मी व्यंग्यकारों के लिए अनुकरणीय भी कहा जा सकता है।

मनोहर पुरी के व्यंग्य में एक पत्रकार की खोजी 'दीठ' भी है जो उनके लेखकीय कैनवास को विराट आयाम देती है। मनोहर पुरी की व्यंग्य भाषा में एक निश्चित 'राग' है जो उसे काव्यमय बना देता है। इसीलिये इनका व्यंग्य-शूल तुकान्त शैली की पंखुड़ियों में छुप कर चुभन दंश देता है ।

डॉ. नन्दलाल कल्ला
जोधपुर (राज०)

स्पष्ट दष्टिकोण का व्यंग्य-कर्मी

मनोहर पुरी एक ऐसे सजग, चिंतनशील रचनाकार हैं जो अपने स्पष्ट दष्टिकोण एवं विचारधारा के तहत राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों की व्यंग्यात्मक आलोचना कर रह हैं।

पत्रकार व्यक्तित्व के कारण मनोहर पुरी की व्यंग्य रचनाओं में अपने समय की तात्कालिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करने की तीव्र आकांक्षा दिखाई देती है। ऐसी विसंगतियों को देखने का उनका दष्टिकोण साफ है। मनोहर पुरी ने राजनीतिक विसंगतियों के अतिरिक्त मध्यवर्गीय परिवार की प्रतिदिन उलझा देने वाली विसंगतियों का भी सहज चित्रण किया है। मनोहर पुरी की रचनाओं में व्यंग्य के एक नये शिल्प की पकड़ दिखाई देती है। गद्यात्मक व्यंग्य रचनाओं में पद्य की एक अलग लय है जो पाठक को कविता का आनन्द देती है। मनोहर पुरी की रचनाओं में एक विशेषता यह है कि रचनाकार ने जो कहा है वह पूरी ईमानदारी के साथ कहा है। व्यंग्य रचनाओं के कथ्य पर वैचारिक दष्टिकोण के कारण बहस की बहुत गुंजाइश है। हम अनेक बातों में उनसे असहमत हो सकते हैं परन्तु साहित्य तो है ही वैचारिक बहस का मंच। इसमें अगर ऐसी बहस न उभरे तो उसकी सार्थकता ही क्या है। मनोहर पुरी ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में ऐसी ही बहस को जमीन दी है। पाठक इस बहस का स्वागत करेगें ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रेम जनमेजय
संपादक व्यंग्य यात्रा,नई दिल्ली

विशिष्ट शैली के रचनाकार

मनोहर पुरी इस कालखंड में महत्वपूर्ण व्यंग्यकार के रूप में उभरे हैं। उन्होंने व्यंग्य की एक विशिष्ट शैली विकसित की है। उनका वाक्य विन्यास काव्यात्मक है। यह उनकी शक्ति भी है और कमजोरी भी। इस प्रकार का प्रयोग जहां रचना के सौन्दर्य को बढ़ाता है,वहीं कई बार व्यंग्य के प्रभाव को शिथिल भी करता है।

मनोहर पुरी का व्यंग्य-संसार बहुत विस्तत है। उन्होंने राजनीति,समाज,संस्कति,प्रशासन,धर्म आदि क्षेत्रों की विसंगतियों की बहुत गहरे तक जा कर पड़ताल की है। उनकी शैली में एक अलग किस्म का चुटीलापन है। वह भाषाई प्रतिमानों के साथ खिलवाड़ करके अभीष्ट व्यंग्यार्थ की प्राप्ति सुनिश्चित करते हैं।

सुभाष चंदर
गाजियाबाद

लोकतंत्र के पाये

लोकतंत्र के पाये सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार मनोहर पुरी का पांचवां व्यंग्य संग्रह है। मनोहर पुरी एक ऐसे सजग, चिंतनशील रचनाकार है, जिन्होंने राजनीति,समाज,संस्कृति,प्रशासन ,धर्म आदि क्षेत्रों की विसंगतियों की बहुत गहरे जा कर पड़ताल की है। उनकी शैली में एक अलग किस्म का चुटीलापन है,जो इस संग्रह के व्यंग्यों में बखूबी दिखाई देता है।

पुस्तक : लोकतंत्र के पाये
लेखक : मनोहर पुरी
प्रकाशक : प्रतिभा प्रतिष्ठान,नई दिल्ली

हास्य व्यंग्य का परिदृश्य और भविष्य

शब्द मानव द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला सर्वोत्तम रसायन है। यह घुटते हुए आवेश को बाहर निकाल कर लाने वाला ताजी हवा का वातायन है। पर क्या भड़ास निकालना ही व्यंग्य का सरोकार है। क्या हास्य से केवल गुदगुदी ही दरकार है। स्थूल रूप से दोनों एक ही दिखाई देते हैं परन्तु इनमें कुछ सूक्ष्म भेद हैं। हास्य और व्यंग्य दोनों ही वृत्तियों का जन्म सामाजिक और नैतिक विद्रूपता का परिणाम है।

व्यंग्य केवल किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही लिखा जाता है। उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जब शब्द रूपी रसायन में तेजाब सरीखे ध्येय का सम्मिश्रण किया जाता है तो वह एक ऐसे हथियार का रूप ले लेता है जो सामाजिक विद्रूपता पर करारा प्रहार करता है। यहां वहां नश्तर चुभा कर किसी को पीड़ा पहुंचाना व्यंग्य का उद्देश्य हो ही नहीं सकता। नश्तर की छुअन मात्रा से ही समाज के किसी पके हुए फोड़े का मवाद बाहर निकाल कर उसे नासूर बनने से रोकना ही इसका ध्येय हो सकता है।

हास्य मनोरंजन की हल्की फुल्की मनःस्थिति में भी जन्म ले सकता है। जरूरी नहीं कि किसी कुरीति पर चोट करना ही हास्य का उद्देश्य हो। इस प्रकार व्यंग्य बुद्धि की उपज है और इसे मन का भोजन कहा जा सकता है।

व्यंग्य उद्देश्य को ध्यान में रख कर लिखा जाता है परन्तु यह उद्देश्य किसी के प्रति द्वेष की भावना का सर्वथा निषेध करता है। गीता के बारहवें अध्याय के 12वें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि मुझे वे लोग सर्व प्रिय हैं जो किसी से द्वेष नहीं रखते। द्वेष रहित भक्त ही उन्हें श्रेष्ठ मानव भी लगते हैं। इसलिए व्यंग्यकार को लिखने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वह किसी के प्रति द्वेष भाव रख कर तो नहीं लिख रहा। यह बात साहित्य की अन्य विधाओं पर भी लागू होती है परन्तु व्यंग्य के क्षेत्रा में इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखने की आवश्यकता है।

व्यंग्य समाज के कल्याण के लिए लिखा जाता है। इस प्रकार उसकी कल्याणकारी भूमिका व्यंग्य को शिवतत्व के समीप ले आती है। जिस प्रकार शिव राक्षसी वृत्तियों के संहारक हैं वैसे ही व्यंग्य सामाजिक विद्रूपताओं को नष्ट करने में सक्षम है। विष वह रसायन था जिसे अपने कंठ में धारण करके शंकर कल्याणकारी शिव कहलाए। इसी प्रकार व्यंग्य के तेजाबी रसायन को अपनी कलम की नोक पर धारण करके व्यंग्यकार समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार करके समाज के कल्याण की ओर प्रवृत्त होता है।

इस प्रकार व्यंग्य वह अस्त्रा है जिसका बहुत ही सजगता,सतर्कता और सहृदयता से प्रयोग किया जाना चाहिए।

व्यंग्य का सार्वजनिक होना अनिवार्य है। कविता की भान्ति व्यंग्य स्वान्तः सुखाय के लिए नहीं लिखा जा सकता। इसे तो दूसरों तक प्रेषित करना ही होता है तभी इसका औचित्य सिद्ध होता है।

घर परिवार और दिन प्रति के जीवन में हम व्यंग्य के इस रूप को देखते हैं। पंजाबी में एक कहावत है– कहे धी नूं सुनाए नूंह नू। अर्थात बात तो बेटी से की जाती है परन्तु वास्तव में वह बहू को सुनाई जाती है। व्यंग्य केवल लिखने अथवा बेचने के लिए ही नहीं लिखा जाना चाहिए जैसा कि आज प्रायः सब जगह हो रहा है। व्यंग्य बेचने का अर्थ है विचार बेचना जिसे मानसिक वेश्यावृत्ति ही कहा जा सकता है। विचार बेचने के लिए नहीं फैलाने के लिए होते हैं। तभी वे स्वस्थ समाज की संरचना और उसके पोषण में सहयोगी बनते हैं। विचार संघर्ष के इस युग में व्यंग्य विचारों की लड़ाई लड़ने का सशक्त माध्यम है। व्यंग्यकारों को यह युद्ध बहुत गहन और सूक्ष्म अध्ययन के बल पर लड़ना होगा। विचार में बहुत क्षमता है। व्यंग्यकार को यह भी देखना होगा कि जो विचार वे पाठक को दे रहे हैं उन्हें वे आत्मसात कर भी पा रहे हैं अथवा नहीं। इसलिए अनिवार्य है कि विचारों की अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का चयन पूरी गंभीरता से किया जाए। यहां यह प्रश्न किया जा सकता है कि यदि व्यंग्य बेचा नहीं जाए तो उसका प्रचार प्रसार कैसे होगा। इसके लिए मेरा उतर है कि मैं व्यंग्य प्रकाशन के विरूद्ध नहीं हूं परन्तु व्यंग्य किसी व्यवसायी के हितों की पूर्ति के लिए सप्रयास नहीं लिखा जाना चाहिए जैसा कि आज व्यंग्य अथवा हास्य कविताओं के क्षेत्रा में हो रहा है। मंचों पर सारा प्रयास हास्य परोसने का हो रहा है। लोकप्रियता,प्रचार तथा धन की ललक ने व्यंग्य को धंधा बना दिया है। इसी कारण दूरदर्शन और चलचित्राों में हास्य फूहड़ता की सीमाएं लांघता जा रहा है।

व्यंग्य के मूल में राष्ट्र और समाज का हित निहित होना चाहिए। किसी व्यवसायी का नहीं। व्यंग्य के बाण तो समाज के भीतरी परतों में छिपे निर्मल जल स्रोतों को बाहर निकालने के लिए होते हैं किसी को चोट पहुंचाने के लिए नहीं। इसीलिए आज का व्यंग्य केवल गुदगुदी अथवा परिहास करने का विषय न हो कर उद्देश्य युक्त साहित्य है।

मैं यहां व्यंग्य के इतिहास में जाना नहीं चाहता। हमारे यहां यह कहना आम बात है–– है भूतकाल अति उज्ज्वल भविष्य काल गौरवशाली पर हम वर्त्तमान की बात बहुत ही कम करते हैं। जरूरत इस बात की है कि वर्तमान में व्यंग्य की मशाल निरन्तर जलती रहनी चाहिए। किसी भी जीवन्त समाज के लिए इस अलाव का जलते रहना अनिवार्य है। जरूरी नहीं कि यह आग मेरे ही सीने में सुलगे। किसी भी व्यंग्यकार के सीने में सुलगती लौ समाज को जागृत रखेगी इसमें सन्देह नहीं।

मेरी मजबूरी

जब अपने विषय में कुछ न कुछ लिखना लगने लगे जरूरी तो समझ लो कितनी बड़ी सामने आई होगी मजबूरी। इसी मजबूरी ने अर्जून को कुरुक्षेत्रा में बुलवाया था,उसने रण में खड़े अपने ही बन्धु बांधवों पर गाण्डीव से बाण चलाया था। हर लेखक ने दूसरों पर तो पानी पी पी कर लिखा है,स्वयं अपने पर ही लिखने का स्वाद तो किसी विरले ने ही चखा है। स्कूल में पढ़ता था तभी से छोटी मोटी रचनाएं लिखने का सिर पर चढ़ा रहता था जूनून, कहीं न कहीं से व्यंग्य उसमें आ ही गया जैसा भी बनता था मजबून। कॉलेज के बाद जब पत्राकारिता को व्यवसाय के रूप में अपनाया,'' इल्ली,बिल्ली यह दिल्ली ' नामक एक कॉलम लम्बे समय तक निरन्तर चलाया। व्यंग्य इसमें भी लेखन का आधार था,भले ही रोज लिखना अखबार के लिए दरकार था।

गांधी,नेहरु और शास्त्राी के युग के बाद जब नीति अनीति बन गई, आदर्शों और स्वार्थों में परस्पर लड़ाई ठन गई। राजनीतिक दल टूटने और जुड़ने लगे,अपनों के ही तीर अपनों

के ही वक्ष की ओर मुड़ने लगे। अपने द्वारा ही चुने गए प्रत्याशियों को बड़े बड़े नेता स्वयं ही हरवाने लगे,और देश की सत्ता के मोहरों को अपने ही हितों के अनुसार चलवाने लगे। जब देश में भूखा मरने लगा इन्सान,और नारा उछलने लगा मेरा भारत महान। जब राजनीति नित बदलने लगी नए नए परिवेश,जब आया राम और गया राम के वंशजों का विधान सभाओं में बेरोकटोक होने लगा प्रवेश। तब मैंने अपना सारा जोर राजनीतिक विषयों पर लिखने में लगाया था और हिन्दी में व्यंग्य लिखने के जुनून ने मन को भरमाया था। राजनीति में हर रोज कोई न कोई नवीन और अजीब घटना होती थी,देश और उसकी जनता उसे गले में बंधे पत्थर की तरह दिन रात ढोती थी। हर घटना पर दो चार कॉलम लिख कर पत्राकारिता का धर्म तो निभाना था,यही मेरे जीवन की संसदीय पत्राकारिता का सबसे दुःखद् जमाना था। जब झूठे प्रचार के चारों ओर से आसमान में चलाए जा रहे थे तीखे बान, तब पहला व्यंग्यं संग्रह प्रकाशित हो कर आपके पास आया '' मेरा भारत महान''।

जब गरीबी की जगह गरीब हटाए जा रहे थे,जनता को समाजवाद के नए नए अर्थ समझाए जा रहे थे। सोवियत संघ कैसे गरीबों से मुक्त हुआ दिखाया जा रहा था,गरीबी हटाने के लिए गरीबों का मरना जरूरी है बताया जा रहा था। जब राजनीति पर किसी सिद्धांत का आदर्श नहीं कोई व्यक्ति विशेष भारी था,जब परिवारवाद को ढोना हर छोटे बड़े कार्यकर्त्ता की लाचारी था। समाज और उसकी राजनीति घुड़दौड़ हो गई थी,जनता भविष्य के झूठे सुनहरे सपनों में खो गई थी। समाज में व्यक्तिवाद का दौर रह रह कर बिजली सरीखा कौंध रहा था, जैसे भी बन पड़े हर नेता दूसरे नेता को रौंद रहा था। मुख्य बात थी कि यदि अपना अस्तित्व बचाना है तो जैसे भी हो दूसरों को पीछे छोड़िए,तब भी बहुत विवश हो कर मुझे लिखना पड़ा था'' रौंद कर दौड़िए''।

जब शेषन राजनीति को चुनाव सुधारों के शिंकजे में जकड़ने लगे थे, उस समय कई कई स्थानों से एक एक नेता चुनाव लड़ने लगे थे। जैसे भी हो अपनी सीट बचाने के लिए दिन रात एक करने लगे थे,एक ही जगह में होने वाली संभावित हार से बहुत डरने लगे थे।

क्योंकि राजनीति में बढ़ता ही जा रहा था भ्रष्टाचार और दुराव,चुनाव आयोग चाहता था कि एक नेता केवल एक ही स्थान से लड़ पाए चुनाव। नेताओं ने अपनी उखड़ती दुकान को रिश्तेदारों के नाम पर चलाया। जब स्वयं मजबूर हुए तो,सत्ता का दामन,बीवी, बच्चों या भाई भतीजों के हाथ थमाया। इन राजनैतिक अनाचारों से जनता जब होने लगी हताश, तो भी इसी मजबूरी में लिखा गया था सर्वप्रिय ग्रंथ'' चंद बीवियों की तलाश।''

समाज में आज भी विद्रूपता और मुखौटों का बोलबाला है,झूठों के मुहं पर है बहुत चमक और सच्चों का पूरा मुहं काला है। आज के समय में भी सर्वत्रा भ्रष्टाचारी,भूख, बेकारी और लाचारी ही कथ्य है,जल्दी ही आपके हाथों में होगा,जूठन ही सत्य है।

इतना व्यंग्य लिखने पर भी पत्राकारिता ने पीछा नहीं छोड़ा,व्यंग्य श्री सम्मान के स्थान पर हिन्दी अकादमी ने भी हमें पत्राकारिता के साहित्य सम्मान से ही जोड़ा । रेल वालों को भी हम बहुत लुभा गए ,वह हिन्दी में मौलिक रचना का पुरस्कार थमा गए। यह सब साथ साथ चलना बहुत जरूरी है व्यंग्य लिखना आज भी इस दिल की मजबूरी है।

मनोहर पुरी को पढ़ते हुए

इन दिनों व्यंग्य की दुकान खूब चल रही है । जैसे छंद की मुक्ति ने अनेक महान साहित्यकारों के लिए साहित्य प्रवेश का एक शार्टकट उपस्थित कर दिया था और एक भगदड़ कविता की दुनिया में मच गई थी वैसी ही भगदड़ इन दिनों व्यंग्य में मची हुई है । व्यंग्य नामक माल खूब बिक रहा है, इसलिए उपभोक्ता संस्कृति के माहौल में दुकानें धड़ाधड़ खुल रही हैं। माल जब खूब बिकता है तो नक्काल अपने समस्त हथियारों से लैस होकर ग्राहक को चूना लगाने के नए नए तरीके खोजते रहते हैं । किसी भी अखबार या पत्रिका को देख लीजिए, व्यंग्य के बिना ऐसे लगती है जैसे नेता बिना घोटाले के ।

मनोहर पुरी व्यंग्य के इस फैशनी दौर से बहुत पहले से इसी शैली में व्यंग्य लिख रहे हैं इसीलिए उनका लेखन इस फैशन से अलग दिखाई देता है । उनमें वैचारिक स्पष्टता है । मनोहर पुरी की एक और विशेषता है, वह व्यंग्य को गद्य गीत की तरह लिखते हैं । उनकी रचना पढ़कर व्यंग्य कविता का सुख मिलता है । इसे हिन्दी साहित्य की नव्य विधा का बीजारोपण भी कह सकते हैं ।

मनोहर पुरी के पास विषय का वैविध्य है । उनका अनुभव क्षेत्रा अत्यधिक व्यापक है । वह छोटे से छोटे विषय को व्यापक फलक देने की सामर्थ्य रखते हैं और विषय का सही निर्वाह करने की सशक्त शैली भी उनके पास है । उनका कनछेदी लाल जिसे कभी कभी वह प्यार से के.सी. लाल भी कह देते हैं, उनका विचार वाहक है । निरन्तर लिखने को तत्पर मनोहर पुरी को शुभकामना ही दी जा सकती है कि वह लिखें और लिखें ।

µप्रेम जनमेजय

[illegible]

[illegible]